23 वाँ अंक | वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका | 2020-21

तरंग

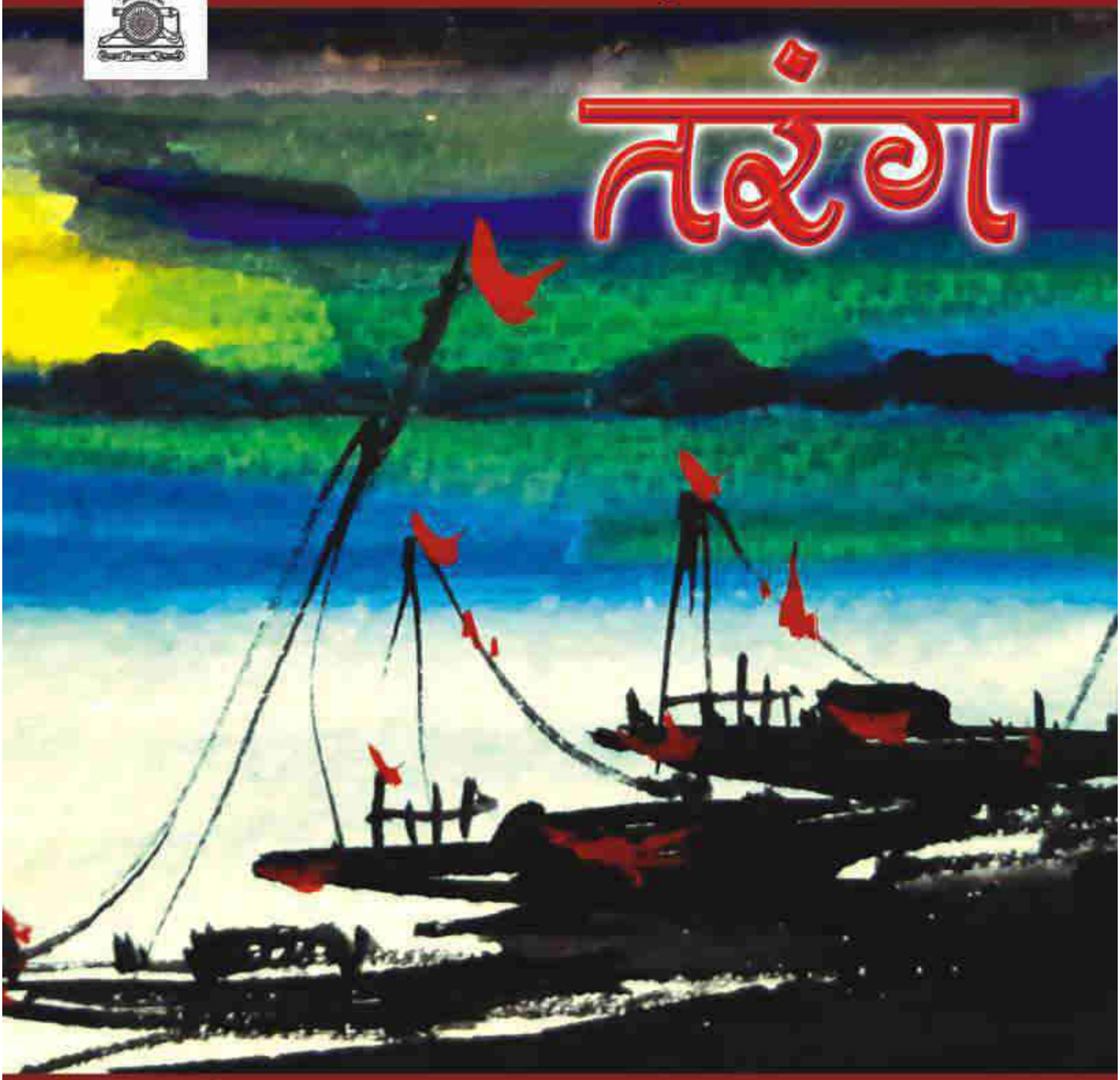

आयुध निर्माणी दमदम

कोलकाता - 700 028

आयुध निर्माणी दमदम के अनुसंधान एवं विकास उत्पाद

सेल एसेम्बली

आयुध निर्माणी दमदम ने अपने निजी **आर एण्ड डी प्रयासों** के द्वारा पूरी सफलता से सेल एसेम्बली ड्राइंग संख्या 175·18·23 cb का उत्पादन किया है। इसका मुख्य प्रयोग T-72 टैंक के मेन बैरेल में एम्युनिशन को भरने के लिए किया जाता है। इसके विकास का नोडल **अनुभाग एफ.एस** है। इस प्रोडेक्ट का ब्लक प्रोडेक्शन क्लीयरेन्स CQA(AVA), आवडी से प्राप्त किया गया है।

हमारे अन्य आर एण्ड डी उत्पाद

माईन एन्टी टैन्क 1 बी

माईन एपी 1 बी

एपीएम-14

एवी स्पेर्स (टी-72 & टी -90 के लिए फ्रेम सेल)

एवी स्पेर्स (रैकव्स एसी)

एवी स्पेर्स ईआरए ब्रैकेट

तरंग

अंक 23 वाँ वर्ष 2020-21

मुख्य संरक्षक

सुनिल कुमार पट्टनायक

महाप्रबंधक

संरक्षक

विजय कुमार

अपर महाप्रबंधक

सह संरक्षक

सुभाष चन्द्र यादव

संयुक्त महाप्रबंधक

मुख्य सम्पादक

सचिन कुमार

उप श्रम कल्याण आयुक्त एवं हिन्दी अधिकारी

सम्पादक मंडल

देबाशीष भट्टाचार्या, क.का. प्रबंधक/ स्थापना

श्रीमती नीलम पाण्डे, क. अनुवाद अधिकारी

सोमाश्री चक्रवर्ती, क. अनुवाद अधिकारी

आवरण पृष्ठ के चित्रकार

श्री अभिजीत मुखर्जी, चार्जमैन/ एच एम एस

तरंग में प्रकाशित लेख व रचनाएँ लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषयसूची

विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
संदेश		
सम्पादकीय		
मानसिक तंदुरुस्ती एक आवश्यकता	सचिन कुमार	1-2
आयुध निर्माणी दमदम में राजभाषा के बढ़ते कदम	नीलम पांडे	3-4
गर्व है मुझे भारतीय होने पर	सोमाश्री चक्रवर्ती	5
आयुध निर्माणी दमदम कोविड-19 के विरूद्ध लड़ाई (रिर्पोट)		6-7
कोविड 19 महामारी और खान-पान का महत्व	डॉ नीतेश राज	8
एक जन्मदिन ऐसा भी	बन्टी कुमार	9-10
फूटा घड़ा	संदीप मिश्र	11
खुशनुमा कार्यस्थल	सचिन कुमार	12-13
काला हिरण	रूबी सिंह	14-15
साधु की सीख	मयंक शुक्ला	16
परछाई	गौतम चैटर्जी	17
रचनात्मक बनिए-जीत आपकी होगी	गौरांग चन्द्र नायक	18
हमारा संकल्प	रूबी सिंह	19-20
भावनात्मक बुद्धि की उपयोगिता	सुस्मिता कुमारी	21-22
भाग करोना भाग	अभिजीत मुखोपाध्याय	23
शेर	ओइंद्रिला भट्टाचार्या	23
मातृ-मन्दिर	मिथिलेश शर्मा	24
पावती		35-36
केन्द्रीय सरकार का राजभाषा नियम 1976		37
राजभाषा में काम करने का महत्व		38
हिंदी बंगला अक्षर परिचय		39
भारत का संविधान		40

संदेश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
आयुध निर्माणी बोर्ड
10ए, शहीद खुदीराम बोस रोड,
कोलकाता - 700 001
Government of India Ministry of Defence
ORDNANCE FACTORY BOARD
10-A, S.K. Bose Road, Kolkata-700 001

चन्द्र शेखर विश्वकर्मा, भा.आ.नि.से
महानिदेशक एवं अध्यक्ष

प्रिय श्री एस.के पट्टनायक

यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आयुध निर्माणी दमदम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका "तरंग" के 23वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमारी आयुध निर्माणियों जहाँ एक ओर विशिष्ट रक्षा उत्पादों के माध्यम से देश के प्रति अपना कर्तव्य निभा रही हैं, वही दूसरी ओर अपने अन्य संवैधानिक दायित्वों का भी निष्ठापूर्वक अनुपालन कर रही हैं। राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन देना तथा उसे अपने दैनिक काम में अपनाना भी हमारा ऐसा ही दायित्व है। "तरंग" का निरंतर संग्रहणीय एवं पठनीय सामग्री के साथ प्रकाशन सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का संपादक मंडल गृह-पत्रिका "तरंग" को उत्कृष्ट रचनाओं के साथ आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत करने में कोई प्रयास बाकी नहीं रखेगा। मेरी कामना है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति जागृति आए और राजभाषा के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य पूरा हो सके।

मेरी तरफ से पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अनेकानेक शुभकामनाएं।

आपका

सी.एस. विश्वकर्मा

संदेश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
आयुध निर्माणी बोर्ड
10ए, शहीद खुदीराम बोस रोड,
कोलकाता - 700 001
Government of India Ministry of Defence
ORDNANCE FACTORY BOARD
10-A, S.K. Bose Road, Kolkata-700 001

ई.आर. शेख, भा.आ.नि.से
वरिष्ठ उप महानिदेशक/
क्यूसी एवं डब्ल्यू बी एंड ई

प्रिय श्री एस.के पट्टनायक

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि आयुध निर्माणी दमदम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में वार्षिक राजभाषा "तरंग" पत्रिका के 23वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा पत्रिकाओं के प्रकाशन का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ निर्माणी में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की साहित्यिक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करना होता है। इन पत्रिकाओं में साहित्यिक रचनाओं के साथ विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों, राजभाषा नियमों आदि के समावेश से कर्मचारियों को विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान प्राप्त होता है। इनके माध्यम से निर्माणी के विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी भी प्राप्त होती है। किसी भी प्रकाशन की निरंतरता को सतत बनाए रखना एक महत्वपूर्ण कार्य है तथा तरंग का निरंतर प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन को गति देने में सहायक साबित हुआहै एवं आगे भी होगा।

मुझे विश्वास है कि "तरंग" का 23वां अंक अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

आपका

ई.आर.शेख

संदेश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
आयुध निर्माणी दमदम
जेसोर रोड, कोलकाता-700 028
Government of India, Ministry of Defence
Ordnance Factory Dum Dum
Jessore Road, Kolkata-700 028

सुनील कुमार पट्टनायक, भा.आ.नि.से
महाप्रबंधक

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आयुध निर्माणी दमदम अपनी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में अपनी वार्षिक गृह पात्रिका "तरंग" के 23वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में गृह पात्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं अहम भूमिका निभाती है। "तरंग" पत्रिका में विविध प्रकार के लेखों का समायोजन किया गया है जो कि निर्माणी के अधिकारियों एवं कार्मिकों की साहित्य के प्रति अभिरूचि के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में उनके सजग कर्तव्य निर्वहन को दर्शाता है। आज बदलते परिप्रेक्ष्य से तारतम्य रखते हुए हिन्दी का सरकारी कामकाज में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग के लिए टेकनोलॉजी टूलों की जानकारी एवं प्रयोग ही हिन्दी के महत्व एवं क्षमता को लगातार बढ़ा सकता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख हमारे सुधी एवं सुविज्ञ पाठकगण के लिए अवश्य प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। इनके अलावा छायाचित्रों के समायोजन के माध्यम से निर्माणी में समय-समय पर होने वाली विविध गतिविधियों से भी पाठकों को परिचित करवाने का प्रयास किया गया है।

मैं "तरंग" पत्रिका के साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े प्रत्येक अधिकारी एवं कार्मिकों को शुभकामनाएँ देने के साथ-साथ इसके संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

सुनील कुमार पट्टनायक

संदेश

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
आयुध निर्माणी दमदम
जेसोर रोड, कोलकाता-700 028
Government of India, Ministry of Defence
Ordnance Factory Dum Dum
Jessore Road, Kolkata-700 028

विजय कुमार, भा.आ.नि.से
अपर महाप्रबंधक

यह बेहद प्रसन्नता का विषय है कि आयुध निर्माणी दमदम अपनी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में अपनी वार्षिक गृह पत्रिका "तरंग" के 23वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है।

प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का संवैधानिक तथा महत्वपूर्ण दायित्व होता है राजभाषा नियमों का अनुपालन करना तथा सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना। "ग" क्षेत्र में स्थित इस निर्माणी से इस पत्रिका का प्रकाशन इसी तथ्य का द्योतक है कि यहाँ पर कार्यरत सभी अधिकारी एवं कार्मिक भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रति सचेत होने के साथ-साथ इस दिशा में अपने कर्तव्य निर्वहन की ओर भी सजग हैं। "तरंग" निश्चित रूप से निर्माणी में राजभाषा के कार्यान्वयन को गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आयुध निर्माणी दमदम अवश्य ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नए स्तरों तक पहुंचेगी। मैं "तरंग" पत्रिका के 23वें अकं के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

विजय कुमार

संदेश

सुभाष चन्द्र यादव, भा.आ.नि.से
संयुक्त महाप्रबंधक

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
आयुध निर्माणी दमदम
जेसोर रोड, कोलकाता-700 028
Government of India, Ministry of Defence
Ordnance Factory Dum Dum
Jessore Road, Kolkata-700 028

मुझे यह जान कर बेहद हर्ष हो रहा है कि आयुध निर्माणी दमदम अपनी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में अपनी वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका "तरंग" के 23वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है।

हमारा यह संवैधानिक दायित्व है कि हम सब हिन्दी के राजभाषा के रुप में प्रयोग पर विशेष ध्यान दें। इस परिप्रेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि हमारी निर्माणी में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उजागार करने के उद्देश्य से "तरंग" पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय कार्य है। वार्षिक राजाभाषा पत्रिका "तरंग" के प्रकाशन से निर्माणी में कार्यरत अधिकारियों एवं कार्मिकों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक अवसर प्राप्त हुआ है। अधिक से अधिक कार्मिक राजभाषा में रचना करने में रूचि ले रहे हैं। आशा है कि यह पत्रिका कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह बढ़ाने में अवश्य सफल होगी।

मैं "तरंग" पत्रिका के 23वें अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ एवं यह आशा रखता हूँ कि भविष्य में भी निरंतरता से इस पत्रिका का सफल प्रकाशन होता रहेगा।

सुभाष चन्द्र यादव

संपादकीय

सचिन कुमार
उप श्रम कल्याण आयुक्त एवं हिन्दी अधिकारी

मुझे राजभाषा कार्यान्वयन समिति आयुध निर्माणी दमदम द्वारा तैयार तरंग पत्रिका को आपके हाथों में देते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। आयुध निर्माणी दमदम द्वारा प्रकाशित यह अंक आयुध निर्माणी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के विचारो का दर्पण है।

भारत बहुभाषी देश है, जन समुदाय को एकता के सूत्र में पिरोने वाला धागा हिंदी है। हिन्दी भारत में एक संपर्क सूत्र का कार्य करती है, क्योंकि अन्य भाषा के बहुत से शब्द हिंदी से मिलते जुलते हैं। हमें यदि कोई भी विषय की अवधारणा को समझना है तो मातृभाषा में उसे आसानी से समझ सकते हैं। हमें कोशिश करनी चाहिए कि अपनी बातचीत में अंग्रेजी शब्दों का अनावश्यक प्रयोग नहीं करना चाहिए । भारत को भारत बने रहने के लिए संस्कृति से अपने संस्कारों का जुड़ना आवश्यक है और इसमें हिंदी सेतु का कार्य कर रही है। हमारे लिए गौरव का विषय है कि हिंदी दुनिया के 176 विश्वविद्यालय में एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, यह संसार की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। आपको गांधी जी की एक बात की तरफ ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ, उन्होंने कहा था कि अपने लोगों के दिलों में हम वास्तव में अपनी ही भाषा के जरिए पहुंच सकते हैं। भारत सरकार की हमेशा प्रयास रही है कि कार्यालय के मौलिक कार्य हिंदी में हो तथा उनका अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में हो । यह खुशी का विषय है कि आयुध निर्माणी दमदम में अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा में अधिकतम कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं।

मैं तरंग पत्रिका के 23वे अंक के सभी साथी लेखकों तथा पत्रिका के लेखन में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहयोगियों का भी बहुत आभारी हूं। इस पत्रिका को प्रकाशित करने में निरंतर सुझाव, तथा सहयोग के लिए आयुध निर्माणी दमदम के महाप्रबंधक श्री सुनील कुमार पटनायक, महाशय, का भी अभारी हूँ। हमें उनका निरंतर समर्थन, सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त है। हम आप सभी से सादर अनुरोध करते हैं, अपना सुझाव तथा अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें ताकि अगले अंक में और अधिक अच्छी प्रस्तुति कर सके।

मानसिक तंदुरुस्ती एक आवश्यकता

सचिन कुमार
उप श्रम कल्याण आयुक्त
एवं हिन्दी अधिकारी

आजकल मानसिक स्वास्थ्य की भी बहुत चर्चा हो रही है, वर्तमान संक्रमण काल में हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य के तरफ ज्यादा ध्यान रखना चाहिए। हम जानते हैं किसी इंसान के मानसिक स्वास्थ्य का देखभाल उतना ही आवश्यक है जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य का, मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करना को हम बुराई समझते हैं, परंतु मानसिक स्वस्थ्य पर चर्चा करना आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य हमारे समग्र स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। जब हम मानसिक रूप से अच्छा महसूस करते हैं, तो हम उत्पादक रूप से काम कर सकते हैं, हमारे खाली समय का आनंद ले सकते हैं, और हम समुदायों में सक्रिय रूप से योगदान दे सकते हैं।

मानसिक तंदुरूस्ती के लिए मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही सामाजिक संबंध तथा आध्यात्मिकता से भी कनैक्शन जरूरी है। समय के अनुसार अपने आपको बदलना आवश्यक है। अँग्रेजी के इलनेस तथा वेलनेस शब्द में केवल एक शब्द का फर्क है। इसका मतलब है कि जब हमारा समाज और परिवार के साथ संपर्क अच्छा होता है तो हमारी मानसिक स्वास्थ्य अच्छी होती है। मुश्किलों को हराते हैं हम जब थोड़ा सा मुसकुराते हैं। एक कहावत प्रचलित है की मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। दूसरा कहावत है कि जो डर गया वो मर गया, यह देखा जाता है कि अधिकतर आदमी डर के कारण मर जाते हैं, हौसले और बुलंदी से महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। समय परिवर्तन होने वाला है, यह बुरा वक्त भी बीत जाएगा। कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है, यह वक्त है दोस्तों बदलता जरूर है। हम मेहनत, ईमानदारी, स्वास्थ्य तथा खुशी का ध्यान रखकर मानसिक तंदुरूस्ती बना सकते हैं हम अभी मेंटल वेलनेस के लिए उपायो पर चर्चा करते हैं।

1. हमको किसी भी परिस्थिति में अपना विवेक नहीं खोना चाहिए। परिस्थिति को स्वीकार करने की आदत डालनी चाहिए, क्योंकि हर एक परिस्थिति हमारे नियंत्रण में नहीं होती है। इस संदर्भ में हम गीता और महात्मा बुद्ध के उपदेशों का उदाहरण लेते हैं। गौतम बुद्ध ने दो तीर का सिद्धांत बताया। इस सिद्धांत का पालन करने से कोई भी आदमी चिंता मुक्त हो सकता है। इसका पालन करना आसान नहीं है, इसके लिए कठिन अभ्यास की आवश्यकता है लेकिन कोशिश करनी चाहिए, यह भगवदगीता का सिद्धांत आत्मा और शरीर से भी जुड़ा हुआ है। जिसमें एक सिचुएशन है जिस पर हमारा कोई कट्रोंल नहीं है और रिएक्शन है, रिस्पांस है, जिस पर हमारा पूरा कंट्रोल है। दो बाणों को दृष्टांत देने के बाद बुद्ध ने कहा "जीवन में, हम हमेशा पहले बाण को नियंत्रित नहीं कर सकते। हालांकि, दूसरा तीर हमारी पहली प्रतिक्रिया है। और इस दूसरे तीर से चुनाव की संभावना बनती है" दूसरा तीर प्रतिक्रिया आपके हाथ में होती है ।

2. हम अपने दिन का प्रारम्भ पॉजिटिव कैपसुल लेकर कर सकते हैं। सकारात्मक विचार जैसे की संगीत, प्राणायाम, ध्यान और योग के साथ दिन की शुरुआत कर सकते हैं। सकारात्मक विचार मन में रखे।

3. छोटी-छोटी खुशियाँ पर उत्सव मनाये, अपने खुशी को साझा करे। अपने मन की व्यथा को अपने विश्वस्त के साथ साझा करे।

4. समाज के साथ घुले मिले। अपने भावना को अपने लोगों के साथ साझा करे। सामाजिक क्षेत्र में लोक कल्याण से जोड़ना।

5. प्रतिदिन के दिनचर्या को सही तरीक से लागू करे। सही समय पर जागे, सही समय पर सोये तथा सही समय पर खाना खाये।

6. प्रतिदिन व्यायाम करे। दस हजार कदम चले।

7. अपने आपको समय के साथ अपडेट करें, नए नए तकनीक सीखे।

8. लोगों को उनके काम के लिए धन्यवाद करें। एक दूसरे को अभिवादन करें।

9. शौक विकसित करें ताकि आप अपने आपको व्यस्त रखें।

10. समाचार के लिए सिर्फ भरोसेमंद स्त्रोतों का ही उपयोग करें, सोशल मीडिया का सजग उपयोग, किसी को कलंकित ना करें और सभी के लिए सहानुभुति रखें, तथा दूसरों के लिए दयालु और उदार रहें।

11. सजगता का अभ्यास करें, सजगता वह स्थिति है जिसमें हम अपने मस्तिष्क में और हमारे आस-पास चल रही चीजों के बारे में जागरुक रहते हैं लेकिन इसको ले कर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते। हर पल को हम पूर्णता के साथ और उसका पूरा उपयोग करते हुए जीते हैं। अपने आपको तथा अगल बगल के वातावरण को जाने और समझे।

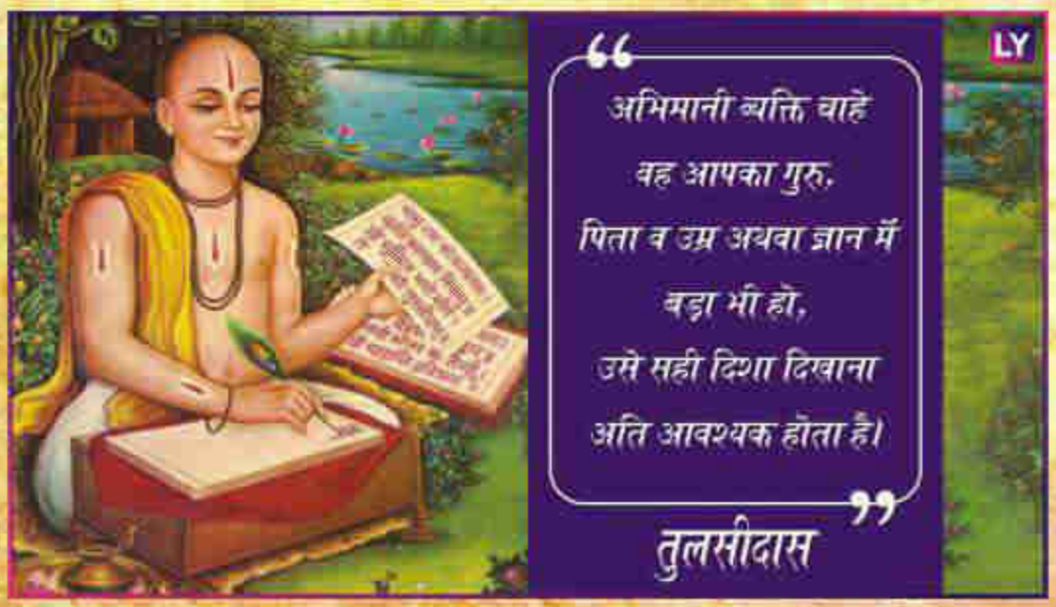

आयुध निर्माणी दमदम में राजभाषा के बढ़ते कदम

नीलम पांडे
क. अनुवाद अधिकारी

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में आयुध निर्माणी दमदम निरंतर कटिबद्ध रही है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए उत्साहवर्धक वातावरण बनाए रखना हमारा सर्वप्रथम लक्ष्य रहा है। निर्माणी में राजभाषा के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने के क्रम में निरंतर प्रगति करते हुए नये आयामों को प्राप्त करने से संबंधित संक्षिप्त विवरण हम आप तक पहुँचा रहें हैं-

हमारी निर्माणी राजभाषा नियम 10(4) के अन्तर्गत वर्ष 2005 से अधिसूचित है एवं 17 अनुभागों द्वारा उनका विनिर्दिष्ट कार्य द्विभाषी रूप में किया जा रहा है साथ ही राजभाषा नियम 8(4) के तहत प्रवीणता प्राप्त कुल 41 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विभागाध्यक्ष के हस्ताक्षर से व्यक्तिशः आदेश जारी किया जा चुका है जिसे प्रत्येक वर्ष अद्यतन किया जा रहा है।

1. हिन्दी प्रशिक्षण – निर्माणी के अधिकारी एवं स्टाफ को प्रवीण एवं प्राज्ञ प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था निर्माणी के अन्दर ही स्थापित है और वर्तमान में हिन्दी में प्रशिक्षित कार्मिकों की प्रतिशतता 94% तक पहुँच गई है।
2. हिन्दी टंकण प्रशिक्षण – निर्माणी के 100 % अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी टंकण में प्रशिक्षित हैं एवं यूनिकोड सिस्टम पर राजभाषा में कार्य निष्पादन करने में सक्षम हैं।
3. हिन्दी में मूल पत्राचार – हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही भेजे जाते हैं, साथ ही अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का भी हिन्दी में उत्तर दिये जाने की शुरूआत की गई है। सभी नेमी पत्र, अग्रेषण पत्रों को हिन्दी में बनाकर प्रयोग किया जा रहा है।
4. धारा 3(3) का अनुपालन– हमारी निर्माणी में धारा 3(3) के कागजातों को शतप्रतिशत द्विभाषी रूप में जारी करने कि परम्परा लागू है।
5. हिन्दी कार्यशाला– निर्माणी में प्रत्येक तिमाही में अभिनव प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है–
   (i) अधिकारियों के लिए पूनश्चर्या कार्यशाला का आयोजन किया गया।
   (ii) यूनिकोड टंकण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
   (iii) प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों द्वारा अनुभाग स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
   (iv) औद्योगिक एवं एमटीएस कर्मचारियों के लिए विशेष अक्षर/भाषा ज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया।
   (v) ए.पी.आर भरने से संबंधित विशेष कार्यशाला
6. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – प्रत्येक तिमाही के अन्त में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है एवं निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास की समीक्षा महाप्रबन्धक स्वयं करते हैं।
7. प्रोत्साहन योजना – सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए निर्माणी के कर्मचारियों द्वारा प्राप्त संबंधित प्राफार्मा का निर्णायक मंडली द्वारा आकलन के उपरान्त 3 अधिकारी एवं 8 कर्मचारियों को राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार के अन्तर्गत नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।
8. राजभाषा चलशील्ड– वर्ष 2019-20 के दौरान निर्माणी में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य सम्पादन हेतु 'आई टी सी' अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान किया गया एवं द्वितीय स्थान पर '

'पी एन्ड पी' अनुभाग को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

9. राजभाषा पखवाड़ा समारोह– दिनांक 01.09.20-14.09.20 तक राजभाषा पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर महापुरूषों की वाणी का डिस्प्ले बैनर बनाकर भी लगवाया गया।
10. प्रकाशन– राजभाषा गृह पत्रिका 'तरगं' एवं त्रैमासिक समाचार पत्र 'निर्माणी दर्पण' का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन करने की शुरूआत की गई।
11. राजभाषा वेबसाइट – निर्माणी का अपना राजभाषा वेबसाइट उपलब्ध है जिसे समय - समय पर अद्यतन किया जाता है। राजभाषा वेबसाइट पर सभी फार्मस एवं फार्मेट द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं। साथ ही प्रत्येक अनुभाग के नेमी पत्रों का मसौदा भी उपलब्ध कराया गया है।
12. आज का शब्द एवं विचार – आज का शब्द एवं विचार प्रत्येक दिन निर्माणी मेन गेट के सामने लिखा जाता है साथ ही निर्माणी वेबपेज पर भी प्रत्येक दिन सभी के कम्प्यूटर पर एक 'आज का शब्द' एवं विचार सभी के सुलभ अवलोकन हेतु अपलोड किया जाता है।
13. सभी पैकिंग बॉक्स एवं कम्पोनेन्टों पर द्विभाषी विवरण – निर्माणी के उत्पादों के पैकिंग बॉक्स पर सभी विवरण द्विभाषी रूप से लिखा जाता है साथ ही निर्माणी में उत्पादित कम्पोनेन्ट पर भी द्विभाषी विवरण लिखा जा रहा है।
14. द्विभाषी पता लिखने हेतु निर्माणियों के नाम का द्विभाषी स्टीकर बनाकर प्रयोग में लाया जा रहा है। साथ ही लिफाफों पर भी हिन्दी में कोरोना संबंधित SOP छपवाकर प्रयोग किया गया।
15. गुगल वाइस टाईपिंग एवं वेबेक्स पर बैठक संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
16. ई-पुस्तक पढ़ने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ई-पुस्तक मेला का आयोजन किया गया।
17. प्रत्येक अनुभाग के राजभाषा मित्र के साथ प्रत्येक माह बैठक और प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला आयोजित की गई।
18. निर्माणी वेबसाईट पर उत्पादन लक्ष्य द्विभाषी अपलोड करने की परम्परा की शुरूआत की गई।
19. आ.नि.बोर्ड को द्विभाषी उत्पादन रिर्पोट ऑनलाईन प्रत्येक माह भेजा जा रहा है।
20. राजभाषा प्रशिक्षण रोस्टर को ऑनलाईन बनाया गया।

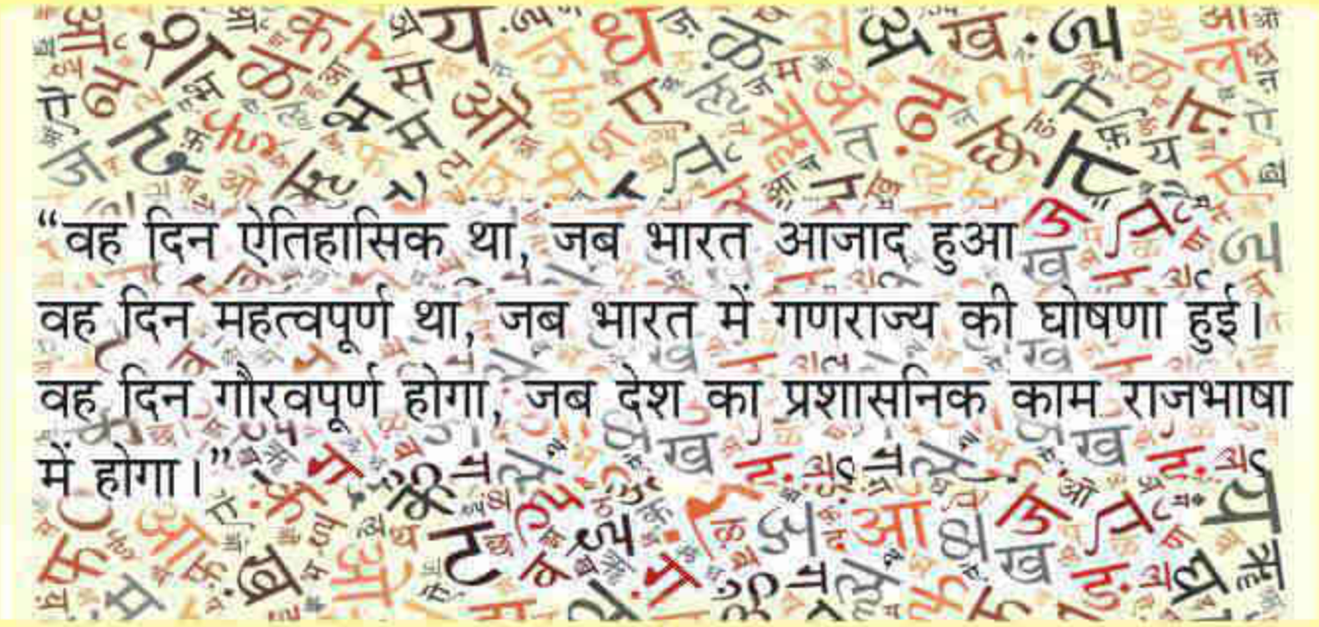

गर्व है मुझे भारतीय होने पर

सोमाश्री चक्रवर्ती
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

शस्य श्यामला वसुंधरा का वो आंचल जिसे
अमृतमयी गंगा ने निखारा है,
अड़िग हिमालय को मुकुट सा धारण किया है
एवं सागर जिसके पांव पखारते है, वह है मेरा देश महान- 'भारत'
और मुझे गर्व है भारतीय होने पर।

एक चिर स्थापित सत्य है कि जिसे अपने देश-भाषा पर अभिमान नहीं है वह पशु तुल्य होता है। मेरे देश भारत को सदियों से बौद्धिक गुरू का दर्जा प्राप्त है। भारत ने ही विश्व को दस अंकीय दशमलव अंक पद्धति दी। शून्य का आविष्कार भी मेरे देश ने किया। मानव संस्कृति के उद्भव पल्लवन-विकास का मुख्य स्तंभ मेरा देश ही रहा है। आदिकाल में आर्यभट्ट वराह-मिहिर जैसे खगोलविद, चरक-सुश्रुत जैसे वैद्य, कालीदास जैसे महाकवि, सम्राट अशोक जैसे शान्ति पूजक, विश्वामित्र जैसे नव सृजक मेरे देश में ही हुए हैं, तो नूतनकाल में गुरूवर रवीन्द्रनाथ टैगोर, महामहिम पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन ए.पी.जे अब्दुल कलाम भी मेरे देश की धरोहर हैं, मेरे देश में जहाँ पूर्व में सीता, सावित्री, अनुसुइया जैसी महान नारियाँ हुई वहीं आधुनिक काल में मदर टेरेसा ने भी भारत की संस्कृति से प्रभावित होकर इसे अपना कार्यक्षेत्र बनाया। भारत ने एक समग्र राष्ट्र के तौर पर समूचे विश्व को शांति और अहिंसा का मार्ग दिखाते हुए 'शांतिपूर्ण सह अस्तित्व' एवं पंचशील का सिद्धान्त दिया। अब वर्तमान में वैश्विक ग्राम की अवधारणा अस्तित्व में आ गयी है ऐसे में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं पंचशील के सिद्धान्त अंधेरे में प्रकाशपुंज के समान हैं। मेरे देश भारत ने ही विश्व को अनंतकाल से धर्म का मार्ग दिखाया है। भारत ने ही मानवता को हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म एवं इनके अंतर्गत समाहित अनेकानेक पंथों से विश्व समुदाय का मार्गदर्शन किया है। मेरे देश की संस्कृति का मूलमंत्र है-दूसरों की समस्याओं, दुखों में शामिल होना। कहा गया है-

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।

जरा सोचिए कितना आनंद प्राप्त होता है जब आप एक ऐसे समाज के अंग होते हैं जिसमें प्रत्येक सदस्य दूसरे की चिंता में रहता है। जब भी कोई व्यक्ति किसी अनजान भिक्षुक-याचक को यथेष्ट दान देता है तब मुझे गर्व होता है अपनी संस्कृति पर जिसमें समाज के असहाय, विकलांग का भी प्रत्येक समर्थ सदस्य द्वारा ध्यान रख जा रहा है। धन्य है ऐसा देश-मुझे गर्व है। सहज समर्पण, सेवा-भाव, त्याग-तपस्या, शूरवीरता, कर्मठता, कर्मपरायणता, सरलता, सहजता, निश्चलता मेरे देशवासियों की थाती है।

भारत ने ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में भी अपना झंडा गाड़ दिया है। आज पश्चिमी राष्ट्रों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए मेरे देश ने अंतरिक्ष कार्यक्रम में पीएसएलवी, जीएसएलवी रॉकेट दागने की क्षमता जैसी उपलब्धियों को हासिल किया है जो कि प्रशंसनीय है। विश्व के अनेक देश अपने उपग्रह अंतरिक्ष में भेजने के लिए भारत की सेवाएं ले रहे हैं। अपने मजबूत प्रतिरक्षा कार्यक्रम के कारण भारत ने विभिन्न प्रकार के स्वदेशी मिसाइलें बनाई हैं। स्वदेशी लड़ाकू विमान 'तेजस' बनाया। सूचना, प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारतीयों की दक्षता तो जग जाहिर है। मेरा देश भारत कदम दर कदम ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर है। मेरे देश की एक और विशेषता मुझे गर्व का एहसास कराती है । वह है-बिना किसी भेद-भाव के 'सभी को समान अवसर'

मातृभूमि की सेवा करूं बस यही एक
मेरा अरमान है।
देवभूमि भारत का मैं अंश हूँ बस यही
अभिमान है।

आयुध निर्माणी दमदम कोविड-19 के विरूद्ध लड़ाई

कोलकाता में पूर्ण लॉकडाउन होने के बावजूद आयुध निर्माणी दमदम की सीमित कर्मचारियों ने कोविड-19 के विरुद्ध लड़ाई करते हुए सैनिटाइजर, मास्क, फेस शील्ड एवं दस्ताना का उत्पादन एवं आपूर्ति लगातार करती रही। उल्लेखनीय है कि सीमित मानव शक्ति एवं निर्माणी में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करते हुए ये सभी उत्पादन किया गया। निर्माणी के 'एम एफ सेक्शन' ने सैनिटाइजर का उत्पादन किया, साथ ही पीटीसी, टूल रूम ने फेस शील्ड का उत्पादन किया जिन्हें कोलकाता स्थित विभिन्न सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ पुलिस द्वारा प्रयोग हेतु भेजा गया। कोरोना आपदा के समय में आयुध निर्माणी के कार्मिकों ने उत्कृष्ट सामाजिक उत्तरदायित्व सतर्कता

स्वच्छता तथा मानवीय सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। इस प्रकार हमारे महाप्रबंधक महोदय ने न केवल आयुध निर्माणी दमदम के कार्मिकों को इस विकट परिस्थिति से जूझने के लिए प्रोत्साहित किया अपितु यह भी सुनिश्चित किया कि निर्माणी के आसपास के इलाकों में लॉकडाउन के दौरान एक भी गरीब इंसान भुखे पेट न सोए। तदनुसार आयुध निर्माणी दमदम की ओर से 12 अप्रैल 2020 को आसपास के इलाकों के लगभग 200 गरीब लाचार निवासियों को चावल, दाल, आलू एवं मुड़ी जैसी कच्ची खाद्य सामग्री पैकेटों में भर कर बॉटे गए। 13 अप्रैल 2020 को निर्माणी की औद्योगिक कैन्टीन में खिचड़ी एवं उबले अंडे को बनाकर आर. जी कर अस्पताल के लगभग 1000 मरीजों एवं उनके पारिवारिक सदस्यों में यह खाद्य सामग्री बाँटी गई। इसके अलावा हमारे आयुध निर्माणी दमदम शाखा की महिला कल्याण समिति की अध्यक्षा द्वारा लॉकडाउन अवधि के दौरान हमारे इस्टेट के निवासियों को चावल, दाल आलू एवं चीनी जैसी खाद्य सामग्री बाँटी गई। इस प्रकार लॉकडाउन अवधि के दौरान हमारे महाप्रबंधक महोदय जी के नेतृत्व, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन में आयुध निर्माणी दमदम के कार्मिकों ने न केवल निर्माणी के कार्मिकों की सुरक्षा प्रणाली की ओर ध्यान दिया अपितु आसपास के गरीब एवं लाचार निवासियों को भी इस विकट परिस्थिति के साथ जूझने के लिए सहायता का हाथ बढ़ा कर सामाजिक सेवा भी की ।

कोविड 19 महामारी और खान-पान का महत्व

डॉ नीतेश राज
ए. एम. ओ

कोविड 19 महामारी ने लोगों को समझा दिया है कि आज के दौर में खान-पान का बहुत महत्व है। हमें यह समझना होगा कि केवल दवा खाने से हम सेहतमंद नहीं रह सकते हैं। हमारे शरीर का तंत्र बेहतर खाने से स्वस्थ रह सकता है। हम क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, कैसी हमारी दिनचर्या है, यह सब रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में काम आती हैं। "इसलिए हमें खाने को दवा के रूप में देखना चाहिए"। यानी हमारा भोजन ऐसा होना चाहिए, जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखे न कि बीमार करे। समस्या यह है कि अभी ज्यादातर लोगों में खाने को लेकर यह नजरिया नहीं है। अगर कोई व्यक्ति अपनी जीवनशैली में इस आधार पर बदलाव लाता है, तो निश्चित तौर पर उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाएगी।

दुनिया में कोरोना वायरस का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। हर कोई इससे बचने के लिए नए -नए तरीके अपना रहा है तो कोई काढ़ा पी रहा है और कई लोग तो अपने इम्यून सिस्टम को बढ़ाने के लिए दवाइयों का सहारा ले रहे हैं। चिकित्सक भी काढ़ा के सेवन की सलाह दे रहे हैं। लोगों ने इसे अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया है। दिन की शुरुआत काढ़ा के साथ हो रही है। आयुर्वेद चिकित्सकों के अनुसार सुबह उठने के बाद सबसे पहले गर्म पानी और काढ़ा का सेवन काफी कारगार रहा है।

कोरोना से लड़ने के लिए हमारे पास अभी तक क्या है? न तो कोई दवा, न टीका और न ही उचित इलाज, ऐसे में आम आदमी क्या करे। अभी तक हमें दुनियाभर के विशेषज्ञों की बातें सुनकर यही समझ आया है कि आप अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्युनिटी बढ़ाइए। इन परिस्थितियों में एक इंसान को जो भी विकल्प दिखता है, वह उसके पीछे दौड़ता है।

इस समय पूरी दुनिया में यही मंत्र है कि मजबूत इम्युनिटी ही कोरोना से बचा सकती है।

आयुष मंत्रालय ने भी अपनी वेबसाइट पर इम्युनिटी बढ़ाने के लिए कुछ बेहद महत्वपूर्ण उपाय बताए हैं, जो कोरोना से बचने में काफी कारगार साबित हुए हैं। जो कि इस प्रकार हैं:-

- पूरे दिन गर्म पानी पिए, संतुलित आहार लें (balanced diet)
- रोजाना योग करे
- खाने में इन मसालों का करे इस्तेमाल (हल्दी, जीरा, धनिया, लहसुन)
- काढ़ा का करें सेवन (तुलसी, काली मिर्च, दालचीनी, सौंठ और मुनक्का)
- हल्दी दूध का करें सेवन (गोल्डेन मिल्क)

अतः हम यह साफ तौर पर कह सकते हैं कि एक संतुलित जीवनशैली और पौष्टिक आहार ही हमें कोरोना वायरस जैसे भीषण बीमारी से लड़ने में मददगार साबित होगी।

एक जन्मदिन ऐसा भी

बन्टी कुमार
अनुभागः टि. आर

" स्वाभिमान, वात्सल्य और प्रेम"

शाम हो चली थी, लगभग साढ़े छह बजे थे.....वही होटल, वही किनारे वाली टेबल और वहीं मैं चाय की चुस्की ले रहा था।

इतने में ही सामने वाली टेबल पर एक आदमी अपनी नौ दस साल की लड़की को लेकर बैठ गया.....

उस आदमी का शर्ट का कॉलर मैला, शर्ट फटा हुआ, ऊपर के दो बटन भी गायब थे.....पैन्ट भी मैला ही था, रास्ते पर खुदाई का काम करने वाला मजदूर या बोझा ढोने वाला जैसा लग रहा था।

लड़की का फ्रॉक धुला हुआ था और बालों को अच्छे से सँवारा भी हुआ था। उसका चेहरा अत्यन्त आनंदित और अन्दर से काफी उत्साहित मालूम पड़ रहा था। वह जिज्ञासा पूर्वक पूरे होटल को इधर-उधर से देख रही थी.....

उनके टेबल पर पड़े गुलदस्ते को कभी निहार रही थी तो कभी ऊपर लगे पंखे को भी बार-बार देख रही थी। जो उनको ठण्डी हवा दे रहा था।

बैठने के लिए गद्दी वाली कुर्सी पर बैठकर वो और भी प्रसन्न दिख रही थी। उसी समय वेटर ने दो स्वच्छ गिलासों में ठण्डा पानी उनके सामने रखा.....

उस आदमी ने अपनी लड़की के लिए एक डोसा लाने का ऑर्डर दिया, यह ऑर्डर सुनकर लड़की के चेहरे की प्रसन्नता और बढ़ गई।

और तुमको? वेटर ने पूछा...

नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिए उस आदमी ने कहा

कुछ ही समय में गर्मागम बड़ा वाला फुला हुआ डोसा आ गया, साथ में चटनी-सांबर भी..... लड़की डोसा खाने में व्यस्त हो गई और वो उसकी ओर उत्सुकता से देखकर पानी पी रहा था।

इतने में उसका बटन वाला पुराना फोन बजा, उसके मित्र का फोन आया था, वो बता रहा था कि आज उसकी लड़की का जन्मदिन है और वो उसे लेकर होटल में आया है.....

वह फोन में बता रहा था कि उसने अपनी लड़की को कहा था कि यदि वो अपने स्कूल में अच्छे नंबर लेकर आयेगी तो वह उसे उसके जन्मदिन पर डोसा खिलायेगा.....

और वो डोसा खा रही है.....

नहीं रे, हम दोनों कैसे खा सकते हैं हमारे पास इतने पैसे कहाँ है? मैने आठ दिन में कटौती करके डोसा के पैसे जुटाये हैं मैं कैसे खा सकता हूँ डोसा, तुम जानते हो, रोज का कमाना, रोज का खाना, किसी दिन

काम नहीं मिला तो पानी पीकर गुजारा करना पड़ता है मेरे लिए घर में नमक-भात बना रखा है.....

उसकी बातों में व्यस्त रहने के कारण मुझे गर्म चाय का चटका लगा और मैं वास्तविकता में लौटा... और सोचने पर मजबूर हो गया कि मेरे देश में ऐसे लोग भी रहते हैं, कि एक डोसा के लिए हफ्ता मेनटेन करना पड़ता है.....और हम लोग हजारों रूपये फिजूल खर्ची में फूँक देते हैं।

कोई कैसा भी हो...

अमीर या गरीब, दोनों ही अपनी बेटी के चेहरे पर मुस्कान देखने के लिए कुछ भी कर सकते हैं..... मैं उठा और काउण्टर पर जाकर अपना बिल और दो डोसा के पैसे दिए और कहा कि उस आदमी को एक और डोसा दे दो.....उसने अगर पैसे के बारे में पूछा तो उसे कहना कि हमने तुम्हारी बात सुनी आज तुम्हारी बेटी का जन्मदिन है और वो स्कूल में अच्छे नम्बर लाई है....

इसलिए होटल की ओर से यह तुम्हारी लड़की के लिए ईनाम। उसे आगे चलकर इससे भी अच्छी पढ़ाई करने को बोलना.....

परन्तु भूलकर भी मुफ्त शब्द का उपयोग मत करना, उस पिता के "स्वाभिमान" को चोट पहुँचेगी....

होटल मैनेजर मुस्कुराया और बोला कि यह बिटिया और उसके पिता आज हमारे मेहमान हैं..... हम भी इन्सान हैं, हमारे पास भी संवेदनाए हैं, आपका बहुत - बहुत आभार कि आपने हमें इस बात से अवगत कराया और मैनेजर ने धीरे से वेटर से कहा कि इस बिटिया को शानदार एक जोड़ी ड्रेस लावो। उनकी आवभगत का पूरा जिम्मा अब हमारा है। आप यह पुण्य कार्य और किसी जरूरतमद के लिए कीजिएगा।

वेटर ने एक और डोसा उस टेबल पर रख दिया, मैं बाहर से देख रहा था.....

उस लड़की का पिता हड़बड़ा गया और बोला कि मैंने एक ही डोसा बोला था.....

तब मैनेजर ने कहा कि, अरे तुम्हारी लड़की स्कूल में अच्छे नम्बर लाई है.....इसलिए इनाम में आज होटल की ओर से तुम दोनों को डोसा दिया जा रहा है।

उस पिता की आँखें भर आई और उसने अपनी लड़की से कहा, देखा बेटी ऐसी ही पढ़ाई, करेगी तो देख क्या-क्या मिलेगा.....

उस पिता ने वेटर को कहा कि क्या मुझे यह डोसा बाँधकर मिल सकता है?

यदि मैं इसे घर ले गया तो मैं और मेरी पत्नी दोनों आधा-आधा मिलकर खा लेंगे, उसे ऐसा खाने को कभी नहीं मिलता.....वह बहुत खुश हो जाएगी।

जी नहीं श्रीमान, आप अपना डोसा यहीं पर खाइए। ऐसा सुनते उसके चेहरे की रंगत उड़ गई। मैनेजर ने कहा

आपके घर के लिए मैनें 3 डोसे और मिठाईयों का एक पैक अलग से बनवाया है। आज आप घर जाकर अपनी बिटिया का जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाइएगा और मिठाईयाँ इतनी हैं कि आप पूरे मोहल्ले को बाँट सकते हैं। और ये ड्रेस मेरी तरफ से बिटिया रानी को अच्छे नम्बर लाने के कारण गिफ्ट है, मैनेजर ने कहा।

बाप बेटी ऐसे खुश हो गए कि मानो एक करोड़ की लॉटरी निकल आई हो। पिता गदगद हो गया और उनकी आँखों से आँसू निकल आये। यह सब सुनकर मेरी आँखें खुशी से भर आई, मुझे इस बात पर पूरा विश्वास हो गया कि जहाँ चाह है वहाँ राह है अच्छे काम के लिए एक कदम आप आगे तो बढ़ाईए, सैकड़ों हाथ मदद को आगे आ जाते हैं।

"आज मुझे यह अहसास हुआ कि, सब कुछ पैसों से नहीं खरीदा जा सकता है, दुनिया में रिश्तों की डोर भी कोई चीज है जो हम सबको एक दूसरे से बाँधे रखती है। "

फूटा घड़ा

संदीप मिश्र
अनुभागः पी.एस

बहुत समय पहले की बात है, किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह रोज भोर में उठकर दूर झरनों से स्वच्छ पानी लेने जाया करता था। इस काम के लिए वह अपने साथ दो बड़े घड़े ले जाता था, जिन्हें वो डंडे में बाँधकर अपने कन्धे पर दोनों ओर लटका लेता था।

उनमें से एक घड़ा कहीं से फूटा हुआ था, और दूसरा एक दम सही था। इस वजह से रोज घर पहुँचते-पहुँचते किसान के पास डेढ़ घड़ा पानी ही बच पाता था। ऐसा दो सालों से चल रहा था।

सही घड़े को इस बात का घमण्ड था कि वह पूरा का पूरा पानी घर पहुँचाता है और उसके अन्दर कोई कमी नहीं है, वहीं दूसरी तरफ फूटा घड़ा इस बात से शर्मिंदा रहता था कि वह आधा पानी ही घर तक पहुँचा पाता है और किसान की मेहनत बेकार चली जाती है। फूटा घड़ा ये सब सोच कर बहुत परेशान रहने लगा और एक दिन उससे रहा नहीं गया, उसने किसान से कहा, " मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा मांगना चाहता हूँ "

"क्यों ?", किसान ने पूछा, "तुम किस बात से शर्मिंदा हो?"

"शायद आप नहीं जानते पर मैं एक जगह से फूटा हुआ हूँ, और पिछले दो सालों से मुझे जितना पानी घर पहुँचाना चाहिए था बस उसका आधा ही पहुँचा पाया हूँ, मेरे अन्दर यह बहुत बड़ी कमी है, और इस वजह से आपकी मेहनत बर्बाद होती रही है।" फूटे घड़े ने दुखी होते हुए कहा।

किसान को घड़े की बात सुनकर थोड़ा दुःख हुआ और वह बोला, 'कोई बात नहीं, मैं चाहता हूँ कि आज लौटते वक्त तुम रास्ते में पड़ने वाले सुन्दर फूलों को देखो।"

घड़े ने वैसा ही किया, वह रास्ते भर सुन्दर फूलों को देखता आया, ऐसा करने से उसकी उदासी कुछ दूर हुई पर घर पहुँचते - पहुँचते फिर उसके अन्दर से आधा पानी गिर चुका था, वह मायूस हो गया और किसान से क्षमा मांगने लगा।

किसान बोला, "शायद तुमने ध्यान नहीं दिया पूरे रास्ते में जितने भी फूल थे वह बस तुम्हारी तरफ ही थे, सही घड़े की तरफ एक भी फूल नहीं था। ऐसा इसलिए क्योंकि मैं हमेशा से तुम्हारी अन्दर की कमी को जानता था, और मैंने उसका लाभ उठाया । मैंने तुम्हारे तरफ वाले रास्ते पर रंग-बिरंगे फूलों के बीज बो दिए थे, तुम रोज थोड़ा-थोड़ा करके उन्हें सींचते रहे और पूरे रास्ते को इतना खूबसूरत बना दिया। आज तुम्हारी वजह से ही मैं इन फूलों को भगवान को अर्पित कर पाता हूँ और अपना घर सुन्दर बना पाता हूँ। तुम्हीं सोचो अगर तुम जैसे हो वैसे नहीं होते तो भला क्या मैं यह सब कुछ कर पाता?"

हम सभी के अन्दर कोई न कोई कमी होती है, पर यही कमियाँ हमें अनोखा बनाती हैं। उस किसान की तरह हमें भी हर किसी को वह जैसा है वैसे ही स्वीकारना चाहिए और उसकी अच्छाई की तरफ ध्यान देना चाहिए, और जब हम ऐसा करेंगे तब "फूटा घड़ा" भी "अच्छे घड़े" से मूल्यवान हो जायेगा।

खुशनुमा कार्यस्थल

सचिन कुमार
उप श्रम कल्याण आयुक्त
एवं हिन्दी अधिकारी

हम जानते हैं कि हमारे दैनिक जीवन का आठ घंटा या उससे अधिक कार्यस्थल पर बीतता है, इसलिए कार्यस्थल पर तंदुरुस्ती रखना आवश्यक है। खुशनुमा कार्यस्थल से कार्य की गुणवत्ता और कार्य की उत्पादकता का दर भी बढ़ता है। कार्यस्थल ऐसा होना चाहिए की ऊंचे प्रबंधन पर लोगों का विश्वास हो, सहकर्मी परस्पर पसंद करते हो तथा अधीनस्थ आदर करते हो। वर्तमान समय में भारत सरकार ने कार्यस्थल पर व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य शर्तों संबंधी कोड, बनाए हैं जो कि कारखाना अधिनियम, ठेका श्रम अधिनियम, निर्माण श्रमिक कानून इत्यादि पुराने तेरह कानून को मिलकर बनाया गया है। इस कोड में भी कारखाना में कार्य करने वाले कर्मचारियों तथा कामगारों के लिए कैंटीन आश्रय, विश्राम कक्ष और क्रेच, मेडिकेल, एम्ब्युलेन्स सर्विस, प्राथमिक उपचार बॉक्स, वार्षिक स्वास्थ्य जांच इत्यादि को अनिवार्य किया गया है। कार्यस्थल को खुशनुमा बनाने के कई उपाय तथा तरीके हैं जो निम्नलिखित हैं। हमें कार्यस्थल पर भी छोटी-छोटी सफलता को सेलिब्रेट करना चाहिए। कार्यस्थल पर समूह गतिविधि को बढ़ाना चाहिए। समय-समय पर सांस्कृतिक गतिविधि अवश्य आयोजित करना चाहिए, जिससे कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन करने का मौका मिलता है। कार्यस्थल पर कभी कभी विशेष कार्यक्रम में परिवार वालों को भी बुलाना चाहिए।

- **कर्मचारियों को उनके कार्यों में पर्याप्त स्वतन्त्रता देनी चाहिए।**
- **कर्मचारियों के अच्छे सुझाव को बढ़ावा देना चाहिए। उनके विचार समय समय पर लेना चाहिए ।**
- **अपने दैनिक रूटीन में छेड़छाड़ नहीं करना चाहिए तथा रूटीन को पालन करने की कोशिश करनी चाहिए।**
- **समय के साथ अपने आप को अपडेट करते रहना चाहिए, नए-नए तकनीक सीखना चाहिए। आजकाल कोडिंग, आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, तथा बिग डाटा एनालिसिस इत्यादि विषय लोकप्रिय हो रहे हैं।**
- **कार्यस्थल पर स्वच्छता और सफाई के लिए प्रबंधन के साथ-साथ कर्मचारियों के लिए भी एक कोड ऑफ कंडक्ट होना चाहिए और कोड ऑफ कंडक्ट का पालन सही ढंग से होना चाहिए।**
- **कार्यस्थल पर छुट्टियां पर्याप्त होना चाहिए नियमानुसार जो छुट्टी मिलना है उसे मिलना चाहिए। किसी विशेष परिस्थिति में ही मना करना चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि छुट्टी में जाने पर ऐम्पलाई फ्रेश होकर फिर आता है और मन लगाकर काम करता है। अमेरिका और यूरोप के देश में कई कंपनियों में एम्पलाई को जबरन छुट्टी पर भेजा जाता है, उसे छुट्टी के दौरान किसी भी प्रकार का ईमेल और मोबाइल से कॉल नहीं किया जाता है। उसे छुट्टी के अवधि में किसी प्रकार से परेशान नहीं किया जाता है, इस प्रकार प्रबंधन उसके व्यक्तिगत जीवन का काफी ध्यान रखता है।**
- **कार्यस्थल पर ही संभव हो तो इनडोर तथा आउटडोर गेम की भी व्यवस्था करनी चाहिए। प्रबंधन को कर्मचारियों के बीच खेलकूद की भावना को विकास करने में सहयोग करना चाहिए।**
- **प्रबंधन को चाहिए कि कैंटीन में स्वास्थ्यकर नाश्ते की व्यवस्था हो, स्वास्थ्य कर भोजन की व्यवस्था हो, जंक फूड तथा भोजन जो शरीर को नुकसान करते हैं, कैंटीन में नहीं होना चाहिए। प्रबंधन स्वास्थ्यकर नाश्ता और भोजन पर उचित सब्सिडी और छूट दे सकती है। जलपान गृह में लाल, पीला, हरा का नामकरण खाद्य का उनके पोषण के आधार पर किया जा सकता है।**

- प्रबंधन को स्किल डवेलपमेंट और स्किल अपग्रेडेशन के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। आजकल ऑनलाइन कोर्सेज भी उपलब्ध हैं उसका भी अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। प्रबंधन को अपने कर्मचारियों को मास्टरी उनके कार्यों में हासिल करने के लिए प्रोत्साहन करना चाहिए, क्योंकि जब आप अपने कार्य में मास्टरी हासिल किए हुए हो तभी आप आपना अधिकतम उपयोग संगठन को दे सकते हैं।
- कार्यस्थल पर 'मैन/ वूमन ऑफ द मंथ' के स्थान पर जो उत्कृष्ट कर्मचारी हैं उनको उच्च प्रबंधन को सबके सामने प्रशंसा करना चाहिए, जिससे कि बाकी के लोग भी उत्कृष्टता से कार्य करने की तरफ अग्रसर हो। उत्कृष्ट कर्मचारियों के साथ प्रबंधन को कॉफी और चाय पर मिलना चाहिए, वे उनके साथ नाश्ता कर सकते हैं, उनके साथ औपचारिक ओर अनौपचारिक बैठक कर सकते हैं ताकि उनका मनोबल उच्च स्तर पर बना रहे। प्रबंधन को वेलनेस एक्सपर्ट तथा परामर्शदाता की सलाह की भी व्यवस्था रखनी चाहिए ताकि कर्मचारी अपने परिवारिक दिक्कतों और व्यक्तिगत जीवन के कठिनाई के बारे में उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सके। प्रबंधन को योग तथा मेडिटेशन कार्यक्रम भी अपने कर्मचारियों के लिए आयोजित करना चाहिए।

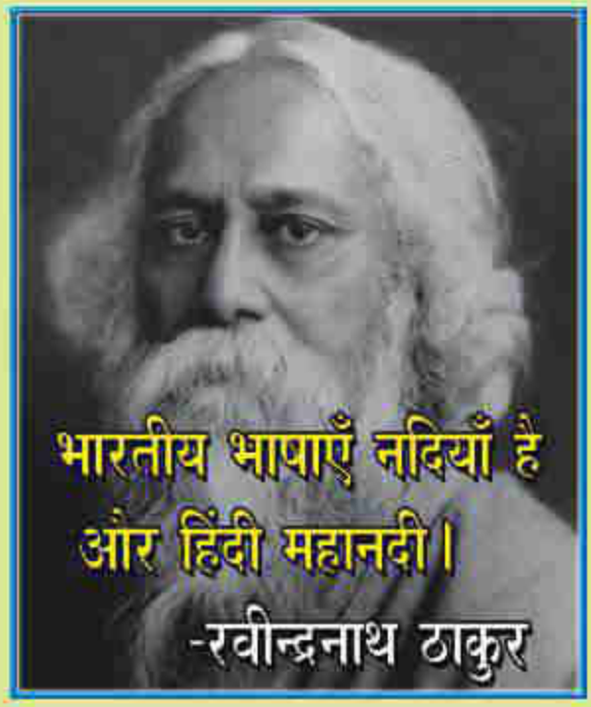

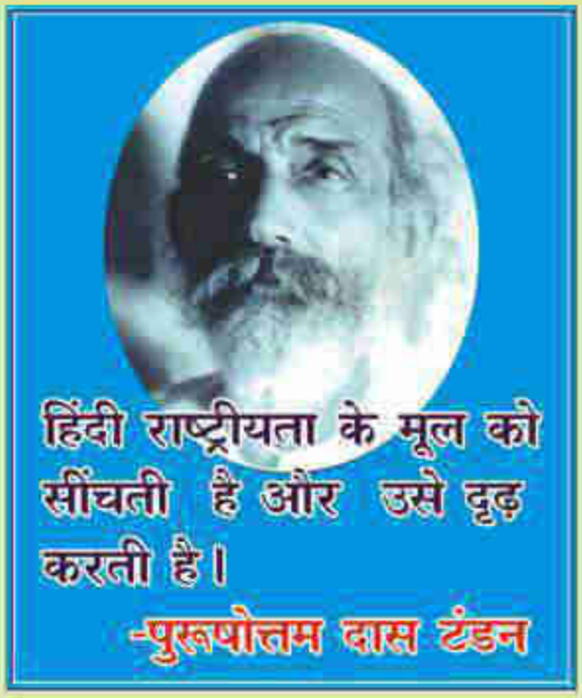

काला हिरण

रूबी सिंह
अनुभागः एच.एम.एस

एक घना जंगल था। जंगल में हिरण बहुत थे। जंगल के बीचों बीच एक झील थी। सबको पानी पीने के लिए इसी झील पर आना पड़ता था। हिरणों के लिए चारों ओर खतरा था। दोपहर को हिंसक जानवर खा-पीकर सुख की नींद सो जाते थे। हिरणों के लिए पानी पीने का यही समय सबसे अच्छा था। जंगल में हिरणों के कई झुंड थे। सबसे बड़े झुंड में लगभग पचास हिरण थे। इन हिरणों का सरदार काले रंग का था। काले हिरणों का वंश संसार में लगभग समाप्त हो चुका था। केवल इस जंगल में इनका एक छोटा सा परिवार था। काला हिरण उसकी पत्नी और दो बच्चे। काला हिरण दूसरे हिरणों से ज्यादा तेज दौड़ सकता था। वह बुद्धिमान भी था और वही था हिरणों के झुंड का सरदार। झुंड को अपने सरदार पर विश्वास था। सरदार भी जी -जान से अपने कर्तव्य का पालन करता था। वह देखने में अद्भुत लगता था। उसकी चमकीली लाल-लाल आँखें बहुत सुन्दर थीं।

एक दिन विचित्र घटना हुई। जंगल में शिकारियों का एक दल शिकार के लिए आया। काफी खोज करने पर भी उनके हाथ कोई शिकार न लगा। दोपहर हो चुकी थी। सूरज तप रहा था। प्यास के मारे उनका बुरा हाल था। शिकारी पानी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। एकाएक उन्हें झील दिखाई पड़ी । शिकारियों की जान में जान आई। उन्होंने पेट भर पानी पिया। वे थक गए थे। पेड़ों की घनी छाया देखकर वे रूक गए। उन्होंने बंदूके उठाकर एक पेड़ के तने के सहारे रख दी। वे सोना चाहते थे कि आहट पाकर चौकन्ने हो गए। हिरणों का झुंड पानी पीने आया था। यह उसी की आहट थी। काला हिरण झुंड का नेतृत्व कर रहा था। हिरणों ने शिकारियों को देख लिया, बंदूके की ओर शिकारियों के हाथ बढ़ाने से पहले ही हिरणों का झुंड बड़ी-बड़ी झाड़ियों के पीछे छिप गया शिकारी भी हाथ आए शिकार को छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने हिरणों का पीछा किया।

हिरण भागे नहीं थे। वे झील के किनारे झाड़ियों की ओट में दम साधे खड़े थे।

शिकारियों ने समझा कि हिरण मैदान की ओर निकल गए हैं। वे दूसरी तरफ चले गए। हिरणों पर आई विपत्ति टल गई। शिकारियों ने काला हिरण को देख लिया था। शिकारियों में उस देश का राजकुमार भी था। वह काले हिरण को देखकर आश्चर्य हो गया। यह तो सचमुच ही अद्भुत हिरण है। राजकुमार ने मन में सोचा।

राजकुमार काले हिरण को जीवित पकड़ना चाहता था। दूसरे दिन उसने कुछ चतुर शिकारी बुलाए । बड़े-बड़े जाल हाथ में लेकर वे लोग जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने झील के किनारे आकर जाल बिछा दिए। उन्हें विश्वास था कि हिरणों का झुंड झील पर पानी पीने अवश्य आएगा। शिकारी दम साधे हिरणों की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ ही देर में शिकारियों को हिरण आते जाते दिखाई दिए। शिकारी झाड़ियों के पीछे छिप गया। हिरणों का झुंड झील की ओर बढ़ा। काला हिरण झुंड के आगे-आगे चल रहा था। शिकारी उसे घेरना चाहते थे एक शिकारी झाड़ियों की ओट लेता हुआ हिरणों के पीछे पहुँच गया। उसने हवा में गोली चलाई। गोली की आवाज सुनते ही हिरणों में भगदड़ मच गई। उसी भगदड़ में काला हिरण जाल में फँस गया। शिकारी भी तो यही चाहते

थे। उन्हें हिरणों का शिकार तो करना था नहीं। राजकुमार ने अपने साथियों को पीछे हटने का आदेश दिया। वह बाकी हिरणों को जानबूझ कर भगा देना चाहता था। मगर यह क्या राजकुमार आश्चर्य में पड़ गया। काले हिरण को जाल में फंसा देखकर हिरण भागते-भागते रूक गए। सारे हिरण एक घेरा बनाकर काले हिरण के पास आकर खड़े हो गए। जानवरों के संगठन का अद्भुत दृश्य उपस्थित हो गया। लगता था, सारे हिरण अपने नेता के लिए आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं। उसी समय हिरणी घेरे से बाहर निकली। उसकी आँखे आँसुओं से गीली थी। वह धीरे-धीरे हिरण के पास आई और प्यार से उसे खुजलाने लगी। मूक पशु करता भी क्या!

राजकुमार को यह सब सपना जैसा लग रहा था। वह भी थोड़ा आगे बढ़ा। उसे विश्वास था कि उसके पास जाने से हिरणें भाग खड़ी होंगी । किन्तु ऐसा नहीं हुआ। हिरणी उसी तरह खड़ी हिरण को खुजलाती रही। राजकुमार चाहता तो आसानी से हिरणी को पकड़ सकता था, किन्तु उस समय वह सब भूल गया।

"छोड़ दो इसें एकाएक राजकुमार ने आदेश दिया। हिरणी की करूणा भरी मूक प्रार्थना ने राजकुमार का हृदय पिघला दिया।

काले हिरण को छोड़ दिया गया। देखते देखते हिरणों का झुंड आँखों से ओझल हो गया। राजकुमार और उसके साथी लौट आए। रात में राजकुमार ने एक सपना देखा। सपने में वही काला हिरण राजकुमार के बगीचे में आया। राजकुमार की आँखें खुल गई। दिन निकलने वाला था। राजकुमार ने खिड़की खोलकर बाहर देखा। सचमुच काला हिरण और हिरणी बगीचे में खड़े थे। राजकुमार तुरन्त बगीचे में गया। उसने हिरणों को प्यार से पुचकारा। कुछ देर तक हिरण और हिरणी राजकुमार के पास खड़े रहे। फिर छलाँग लगाकर जंगल की ओर भाग गए। उस दिन के बाद वे दिनों प्रतिदिन राजकुमार के बगीचे में आने लगे। कुछ दिन बाद राजकुमार राजा बन गया। राजा बनते ही उसने जंगली जानवरों के शिकार पर रोक लगा दी। जंगल के सभी जानवर निर्भय होकर सुख से रहने लगे।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। -महावीर प्रसाद द्विवेदी

साधु की सीख

मयंक शुक्ला
अनुभाग: पी. एस

किसी गाँव में एक साधु रहा करता था, वो जब भी नाचता तो बारिश होती थी, अतः गाँव के लोगों को जब भी बारिश की जरूरत होती थी, तो वे लोग साधु के पास जाते और उनसे अनुरोध करते कि वे नाचें, और जब वो नाचने लगता तो बारिश जरूर होती।

कुछ दिनों बाद चार लड़के शहर से गाँव में घूमने आये, जब उन्हें यह बात मालूम हुई कि किसी साधु के नाचने से बारिश होती है, तो उन्हें यकीन नहीं हुआ।

शहरी पढ़ाई-लिखाई के घमंड में उन्होंने गाँव वालों को चुनौति दे दी हम भी नाचेंगे तो बारिश होगी और हमारे नाचने से नहीं हुई तो साधु के नाचने से भी नहीं होगी, फिर क्या था अगले दिन सुबह-सुबह ही गाँव वाले उन लड़कों को लेकर साधु की कुटिया पर पहुँचे।

साधु को सारी बात बताई गई, फिर लड़कों ने नाचना शुरू किया। आधे घंटे बीते और पहला लड़का थक कर बैठ गया पर बादल नहीं दिखे, कुछ देर में दूसरे ने भी यही किया और एक घंटा बीतते- बीतते बाकी दोनों लड़के भी थक कर बैठ गये, पर बारिश नहीं हुई।

अब साधु की बारी थी, उसने नाचना शुरू किया, एक घंटा बीता, बारिश नहीं हुई, साधु नाचता रहा..... .....दो घंटा बीता बारिश नहीं हुई.....पर साधु तो रूकने का नाम ही नहीं ले रहा था, धीरे-धीरे शाम ढलने लगी कि तभी बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई दी और जोरों की बारिश होने लगी, लड़के दंग रह गए।और तुरंत साधु से क्षमा मांगी और पूछा-

'बाबा भला ऐसा क्यों हुआ कि हमारे नाचने से बारिश नहीं हुई और आपके नाचने से हो गयी?

साधु ने उत्तर दिया - " जब मैं नाचता हूँ तो दो बातों का ध्यान रखता हूँ, पहली बात में ये सोचता हूँ कि अगर मैं नाचूँगा तो बारिश को होना ही पड़ेगा और दूसरी ये कि मैं तब तक नाचूँगा जब तक कि बारिश न हो जाये।"

सार - सफलता पाने वालों में यही गुण विद्यमान होता है वो जिस चीज को करते हैं पूरी तन्मयता से करते हैं और वे तब तक उस चीज को करते हैं जब तक कि सफल न हो जाएं, इसलिए यदि हमें सफलता हासिल करनी है तो हमें उस साधु की तरह दृढ़ निश्चयी व अपने लक्ष्य को प्राप्त करने वाला बनना होगा।

परछाई

गौतम चैटर्जी
अनुभागः एस.ओ, क. का. प्र

ये मेरा वादा है। मैं था, मैं हूँ और मैं रहूँगा। आज मैं 62 साल के उम्र का हो गया हूँ। जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ उस दिन मेरा भी जन्म हुआ। तुम हँस पाए पर मैं नहीं हँस पाया। तुम रो पाए पर मैं नहीं रो पाया। तुमने हर वो काम किया जो मैंने भी किया पर नाम तुम्हारा हुआ। मुझे किसी ने पूछा तक नहीं, ऐसा क्यूँ होता है। आज तक मुझे ये सवाल खाए जाते हैं।

याद है मुझे आज तक जो भी काम भला था या बुरा, तुमने किया, मैं भी एक गूँगे योद्धा की तरह तुम्हारा हर काम तुम्हारे साथ किया पर सभी ने तुम्हारा नाम लिया और किसी ने मुझे पूछा तक नहीं ?

तुम्हारी शादी हुई, मेरी भी हुई, तुम्हें पत्नी मिली पर मुझे नहीं../..क्यों? तुम्हारे बच्चे हुए, मेरे भी हुए। तुम्हें बच्चे मिले पर मुझे नहीं क्यूँ? तुम हर वो रास्ते पर चले जिस पर मैं भी चला, पर किसी ने मुझे पूछा तक नहीं..... क्यों? इस क्यों का उत्तर मुझे कौन देगा? सभी की तरह तुम भी स्वार्थी निकले, आज तुम्हारी पत्नी चल बसी, बेटा छोड़ कर चला गया।

दोस्त रिश्तेदार तुमसे दूर रहते हैं। तुमको एक बोझ समझ के दूरियाँ कायम रखते हैं पर मैं हर वक्त तुम्हारे साथ रहा हूँ और रहूँगा ये मेरा वादा है, पर तुम एक स्वार्थी इंसान पैदा होने के कारण आज तक मुझे याद नहीं किया शाबाशी नहीं दी, वादा करता हूँ मैं तब तक तुम्हारे साथ रहूँगा जब तक तुम जिन्दा हो। जानते हो क्यों? क्योंकि मैं हूँ तुम्हारी परछाई...

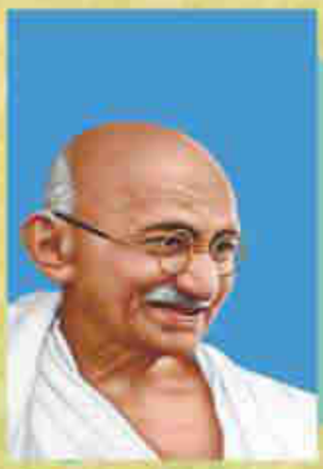

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

-महात्मा गांधी

रचनात्मक बनिए जीत आपकी होगी

गौरांग चन्द्र नायक
अनुभागः एल.एम.एस

"जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते। वे हर काम को अलग ढंग से करते हैं।"

सफलता (Success) और असफलता के बीच केवल कार्य करने के तरीके या ढंग का फर्क होता है जिसे हम " रचनात्मकता (Creativity)" कहते हैं। स्टीव जॉब्स (Steve Jobs) के अनुसार लीडर और अनुयायी के बीच में "रचनात्मकता (Innovation)" का फर्क होता है।

क्या आपने कभी बिल्ली को चूहे पकड़ते हुए देखा है। जब बिल्ली चूहे को अपने मुँह में पकड़ती है तो फिर चूहे को कोई नहीं बचा सकता । जब बिल्ली चूहे को अपने दाँतों से पकड़ती है तो चूहे की उसी पल मौत हो जाती है।

वही बिल्ली अपने छोटे-छोटे बच्चों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए अपने मुंह से पकड़ती है। बिल्ली अपने दाँतों से अपने बच्चे का गला पकड़ती है और एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि बिल्ली के बच्चों को एक खरोंच तक नहीं आती।

बिल्ली के एक ही कार्य को करने के तरीके में कितना अंतर है। यही अंतर " रचनात्मकता (Creativity)" का आधार है।

"प्रत्येक सफल व्यक्ति में एक खूबी समान रूप से पाई जाती है और वह खूबी है रचनात्मकता।"

रचनात्मकता के बिना कोई भी सफल नहीं हो सकता। " रचनात्मकता (Creativity)' का चित्रकार, कवि या लेखक बनने से नहीं बल्कि, प्रत्येक कार्य को सच्चे दिल से करने में है। रचनात्मकता हर पल कुछ नया सीखने एवं प्रत्येक कार्य को उत्साह के साथ बेहतर तरीके से करने की आदत है। कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा, रचनात्मक व्यक्ति हर कार्य में खुशी ढूँढ ही लेता है और यही उसकी सच्ची सफलता होती है।

रचनात्मक बनिए, काम करने के तरीकों में बदलाव लाइए खुद पर विश्वास कीजिए जीत आपकी ही होगी।

कबीर दास के दोहे

साईं इतना दीजिये,
जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं,
साधु न भूखा जाय।।

हमारा संकल्प

रूबी सिंह
अनुभागः एच.एम.एस

आम, पीपल और नारियल के वृक्षों का एक साथ

सभी - प्रणाम। बरगद बाबा, प्रणाम।

बरगद - खुश रहो बेटा। खूब फूलो-फलो। तुम सब चिरायु हो।

आम - आप चिरायु होने की बात कह रहे हैं। आज तो हम सबका जीवन ही संकट में है। आप तो जानते हैं कि वृक्ष कितनी तेजी से काटे जा रहे हैं।

पीपल - हाँ बाबा, यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी वृक्षहीन हो जायोगी। मनुष्य अपने स्वार्थ में यह भी भूल गया कि हमें काटकर वह अपना ही अहित कर रहा है।

नारियल - बाबा मैं भी कई दिनों से इसी चिंता में डुबा हुआ हूँ। इसीलिए तो हम सब मिलकर आपके पास आए हैं।

बरगद - बेटा! मेरी इन विशाल जटाओं ने मानव को न जाने कितनी पीढ़ियाँ देखी हैं। देखते ही देखते यह मनुष्य क्या से क्या हो गया। जिस देश में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है, उसी देश में उन पर ऐसा अत्याचार !

पीपल - लेकिन बाबा मुझे तो आश्चर्य इस बात का है कि हम वृक्ष उनके लिए इतने उपयोगी हैं, फिर भी ये हमें काटने में जरा भी नहीं झिझकते । जरा भी नहीं सोचते कि हम ही उनके जीवनरक्षक हैं, हम ही इनके आश्रयदाता हैं।

आम - हाँ बाबा, अब तो हमारा अस्तित्व ही खतरे में है। तुरंत ही इसका कोई समाधान खोजना चाहिए।

(एक बंदर का खों-खों करते हुए प्रवेश)

बंदर - बरगद बाबा ! बरगद बाबा ! हमें रहने का स्थान दो।

बरगद- क्या हुआ बेटा? तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?

बंदर - बाबा वनों में मनुष्य द्वारा पेड़ काटे जा रहे हैं। हम पशु-पक्षियों पर बड़ा संकट आ पड़ा है। सभी चिंतित हैं कि यदि वृक्ष नहीं रहे तो हम क्या खाएँगे? कहाँ रहेंगे?

कोयल- हाँ बाबा हम भी बहुत दुखी हैं। साँस लेना मुश्किल होता जा रहा है। अब मैं कैसे गा पाऊँगी ?

आम - बाबा देखा आपके मनुष्य के स्वार्थ ने सारे प्राणी-जगत में त्राहि-त्राहि मचा दी है।

नारियल और पीपल - हाँ! हाँ! मनुष्य स्वार्थ में अंधा हो गया है।

बरगद- मेरे बच्चों थोड़ा धैर्य रखो। यदि मनुष्य ऐसा ही करता रहा तो शीघ्र ही उसके समक्ष गहन संकट की स्थिति खड़ी हो जाएगी । तब वह स्वयं वृक्षों के महत्व को समझेगा।

(आपस में बातें करते हुए तीन बच्चों का प्रवेश) (उन्हें आते देख वृक्ष चुप हो जाते हैं।)

राकेश - ओफ! कितनी गर्मी है! धूल और धूँए से मेरा तो दम घुटा जा रहा है । जहाँ देखो वहाँ मोटर, स्कुटर, गाड़ियों का धुँआ और शोर।

रेशमी- (बरगद के पेड़ के पास जाकर) आओ भैया! इस बरगद के नीचे बैठे। कितनी ठंडक है इसकी छाँह में।

आकाश- सचमुच अब जाकर शांति मिली। इसी लिए तो आजकल जगह- जगह लिखा रहता है पेड़ लगाइए और अपने वातावरण को हरा-भरा और शुद्ध बनाइए।

रेशमी- मुझे तो हरे भरे पेड़-पौधे बाग-बगीचे बहुत अच्छे लगते हैं। मैंने भी अपने बगीचे में अमरूद, नींबू, गुलाब और चमेली लगा रखे हैं।

आकाश - हमारे घर के आसपास भी सड़क के किनारे आम, नीम, पीपल के पेड़ लगे हुए हैं, मेरे दादा जी तो नीम का ही दातन करते हैं। वे कहते हैं कि नीम का वृक्ष बड़ा गुणकारी है।

राकेश- हमारे मोहल्ले में बरसों पुराना नीम का एक पेड़ था। लेकिन अभी कुछ दिन पूर्व जब मैं मामा के घर से लौटा तो देखा वह कटा पड़ा है। मुझे बहुत दुःख हुआ।

रेशमी - हाँ भैया, मेरी दादी जी कहती हैं कि वृक्षों में भी प्राण होते हैं। वे भी साँस लेते हैं, पानी पीते हैं । उन्हें भी भोजन चाहिए। काटने से उन्हें भी कष्ट होता है।

सभी पेड़- शाबाश बच्चों, शाबाश!

बरगद - तुम्हारी बातें सुनकर हमने संतोष की साँस ली। अब तो हम तुम लोगो से ही कुछ आशा कर सकते हैं। आज सबके हित में यही है कि वृक्षों को काटे जाने से रोका जाय, और नए वृक्ष लगाए जाएँ।

आम- जरा सोचो, बच्चों! हम वृक्ष मनुष्य जाति के लिए अपने अंगों का सहर्ष दान करते हैं और उसने हमें ही काटना शुरू कर दिया। हम पर क्या गुजरती होगी।

तीनों बच्चे - आप चिंता न करें। हम सब बच्चे मिलकर यह संकल्प करते हैं कि यह संदेश जन-जन तक पहुँचाएँगे अब तो यह कानून बन गया है कि हरे वृक्षों को काटना अपराध है।

राकेश - हम यह भी प्रण करते हैं कि वृक्षों का संरक्षण करेंगे और नए पेड़ पौधे भी लगाएँगे।

रेशमी - जंगल तो जंगल, घर-आँगन में भी पेड़-पौधे लगाकर अपने आसपास के वातावरण को हरा-भरा रखेंगे।

(बच्चे समवेत स्वर में)

आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ
धरती पर हरियाली लाएँ।
वातावरण शुद्ध बनाकर
जीवन में खुशहाली लाएँ।

भावनात्मक बुद्धि की उपयोगिता

सुस्मिता कुमारी
पत्नी: सचिन कुमार
उप श्रम कल्याण आयुक्त एवं हिन्दी अधिकारी

मनुष्य के जीवन में सफलता के लिए भावनात्मक बुद्धि की आवश्यकता बहुत ज्यादा है, ऐसा अनेक रिसर्च में पाया गया है। जिन व्यक्तियों में भावनात्मक बुद्धि की मात्रा ज्यादा है, वे अपने जीवन और केरियर में ज्यादा सफल होते हैं। उनका पारिवारिक जीवन सुखद होता है, उनका समाजिक जीवन अच्छे संपर्क से भरा होता है।

डेनियल गोलमैन की पुस्तक भावनात्मक बुद्धि' (Emotional Intelligence) ने इस शब्द को सारे विश्व में प्रचलित कर दिया। इससे पहले बुद्धि लब्धि को ही सब कुछ माना जाता था। अब यह माना जाने लगा है कि एक अच्छी बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति अच्छी सफलता पा सकता है पर सबसे ऊपर पहुँचने के लिए भावनात्मक समझ का होना भी जरूरी है। अच्छी भावनात्मक समझ रखने वाला व्यक्ति कभी भी क्रोध और खुशी के अतिरेक में आ कर अनुचित कदम नहीं उठाता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनात्मक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने के लिए स्वयं और अन्य में भावनाओं को देखने, समझने और विनियमित करने की क्षमता है। डेनियल गोलमैन के अनुसार इमोशनल इंटेलिजेंस हमारी खुद की भावना और दूसरों को पहचानने की क्षमता के रूप में, खुद को प्रेरित करने के लिए, और हमारे और रिश्ते में भावना को अच्छी तरह से प्रबंधित करने के लिए है। इमोशनल इंटेलिजेंस बुद्धि का मजबूत अनुभव जो एक वस्तु समान और परिस्थिति के विरुद्ध होता है, जैसे संक्रमण काल में आजकल आपको डर लगता है, चिंता सताती है, तनाव होता है, उदासी होती है अनिश्चित का अनुभव होता है, इस पर आपकी प्रतिक्रिया इमोशनल इंटेलिजेंस को प्रदर्शित करती है। जब आप खुश होते हैं, प्यार, उमंग उत्साह में होते हैं तो आप पॉजिटिव इमोशंस का अनुभव करते हैं। प्रमुख इमोशन में क्रोध, हर्ष भय, घृणा, चकित प्रेम दुःख शामिल है। इमोशनल इंटेलिजेंस के अंतर्गत आप अपने स्वभाव, प्रकृति तथा अपनी प्रतिक्रिया को नियंत्रित करते हैं। इमोशनल इंटेलिजेंस के चार प्रमुख भाग हैं, जिसमें पहला भाग सेल्फ अवेयरनेस तथा भावनात्मक स्वयं की जागरूकता, है। दूसरा भाग सेल्फ मैनेजमेंट है, जिसमे भावनात्मक आत्म नियंत्रण, अनुकूलन क्षमता, उपलब्धि अभिविन्यास और सकारात्मक दृष्टिकोण तीसरा भाग में सामाजिक जागरूकता, जिसमें सहानुभूति, संगठनात्मक जागरूकता है। इमोशनल इंटेलिजेंस के चौथे भाग में संबंध प्रबंधन है जिसमें प्रभाव कोच और परामर्शदाता, प्रेरणादायक नेतृत्व, विरोधाभास प्रबंधन टीम वर्क शामिल है। इन कौशलों को भावनाओं के साथ अधिक से अधिक जुड़ाव की आवश्यकता होती है, और किसी भी आकांक्षी नेता तथा प्रभावकारी नेतृत्व के विकास की प्राथमिकताओं का एक हिस्सा उपर्युक्त योग्यता चाहिए।

हम अपने इमोशनल इंटेलिजेंस को कैसे मजबूत कर सकते हैं, इसके कई तरीके हैं। अगर हम लोगों पर विश्वास करते हैं तथा लोग भी हम पर विश्वास करते हैं। हम यदि लोगों को परखना जानते हैं जब हम ऑथेंटिक होते हैं। जब जब हम जो होते हैं वह हम दिखते हैं, जब हम दूसरे को सम्मान करते हैं दूसरे को

अपना पक्ष प्रदर्शन करने का मौका देते हैं, दूसरे के प्रति सहानुभूति रखते हैं। जब हम दूसरे का साथ देते हैं। जब हमारे स्वभाव में लचकता होता है, हम समय के साथ अपने आपको बदलते हैं। इमोशनल इंटेलिजेंस का मतलब है कि हम अपने आप को नियंत्रित व्यवहार प्रकट करते हैं। अभी आप इमोशनल इंटेलिजेंस का उपयोग नहीं करते हैं आप किसी को बहुत ज्यादा टास्क दे देते हैं जो आपका अधीनस्थ करने में सक्षम नहीं होता है। आप पावर हंगरी होते हैं, आप केवल अपना सम्मान को बढ़ाने में विश्वास करते हैं। आप केवल अपनी प्रशंसा पसंद करते हैं तथा अपनी आलोचना सुनना सहन नहीं करते हैं। लोगो में आप परफेक्शान खोजते हैं, जबकि असली जिंदगी में पूर्णता होना संभव नहीं है। जो इंसान काम करता है, उससे गलती होगी लेकिन भूल में दोहराव नहीं होना चाहिए। इमोशनल इंटेलिजेंस को मजबूत करने के लिए आप निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं

माइंडफूलनेस, (सचेतन) ध्यान, योगा, प्राणायाम करके स्थिर मन तथा अपनी भावनात्मक बुद्धि को मजबूत कर सकते हैं। आप छोटी-छोटी बातों में इंजॉय करते हैं, आप कृतज्ञता प्रकट करते हैं। आप में प्रेरणा देने की चाहत होनी चाहिए। आप में सकारात्मक दृष्टिकोण साहस, सत्यता, विनम्रता, सहानुभूति तथा लचकता होने चाहिए। आप असहमत होते हुए भी दूसरे के विचार को सुनते तथा समझते हैं, सम्मान करते हैं। हम संगठन में संस्कृति को सशक्त बनाते हैं, नई और खुली संस्कृति को बढ़ावा देते हैं तब जाकर आपका संगठन में नई कार्य संस्कृति आती है। हमको, बॉक्स के बाहर सोचने की रचनात्मकता होनी चाहिए। हमको अपनी बातों और विचार को प्रकट करने का साहस होना चाहिए। उपरोक्त तथ्य के मद्देनजर हम मानते हैं कि व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी भावनात्मक बुद्धिमत्ता बहुत महत्वपूर्ण है ।

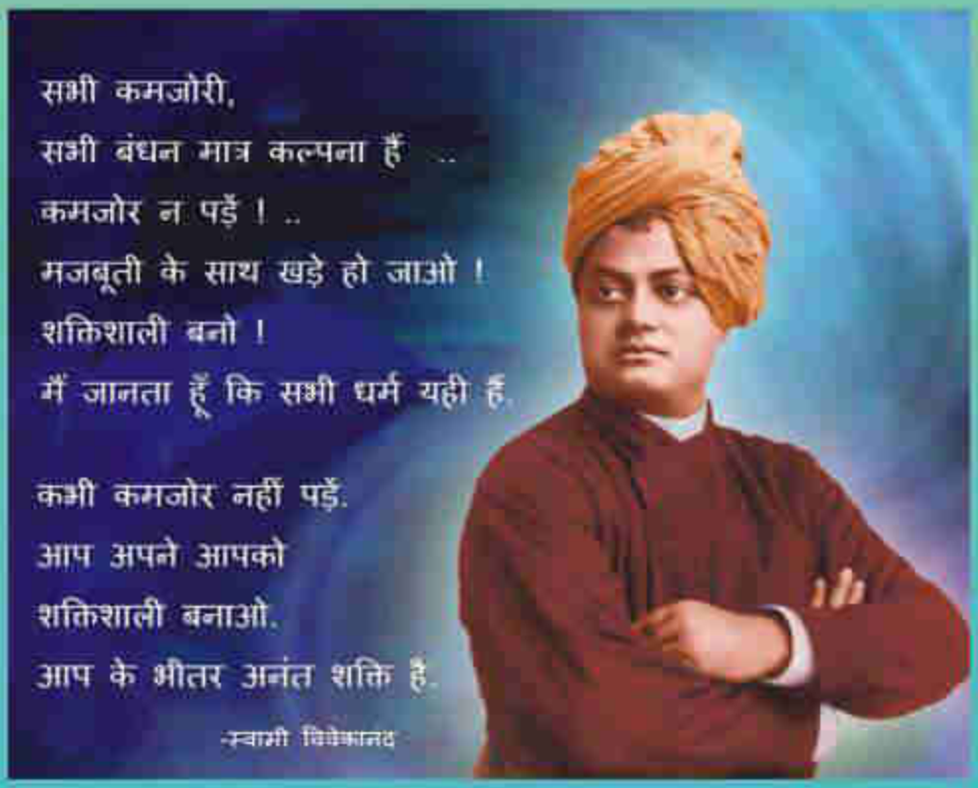

भाग करोना भाग

अभिजीत मुखोपाध्याय
क.का.प्र (एस.जी)

तेरा तेवर देख लिया
तुझे बहुत सहन किया
तेरे नाम से डर लिया
अब भाग करोना भाग।
अपना काम छोड़ दिये
सब कुछ बंद कर दिये
अपनों को हम खो दिये
अब भाग करोना भाग।
मुँह पर मास्क लगा रहे हैं
साबुन से हाथ धो रहे हैं
आपस में दूरी बना रहे हैं
अब भाग करोना भाग।
फिर से सब खोलना है
संसार हमें सजाना है
पहले जैसा रहना है
अब भाग करोना भाग।
निर्माणी में काम करना है
ओ.एफ.डी.सी को चलाना है
ओ.एफ.बी को बचाना है
अब भाग करोना भाग।

शेर

ओइंद्रिला भट्टाचार्या
सुपत्रीः अरूप ज्योति भट्टाचार्या
संयुक्त महाप्रबंधक

चलता है वह अपनी तरह के दाग ले
कुछ कदम अपनी गुफा में
दबे पैरों से चुपचाप
अपने छिपे गुस्से के साथ

उसकी तो आदत है चलना
लंबे-लंबे घासों को चीर
चुपके से अपने शिकार की खोज में
इधर-उधर ढूँढता हुआ गंभीर।

वह ललकारे उन घरों के पास
जो है जंगल के आसपास
खोल अपना मुँह विशाल और पंजे सफेद
इधर-उधर घूमते हुए
पूरे गाँव को डराते हुए।

गाँव वाले बंद हैं कमरों में
उसकी ताकत से डरते हुए
रखता वह तेज कदम गुस्से से
इधर-उधर कठिन निगाहों से देखते हुए।

आखरी आवाज सुनी है रात में
चलती हुई गाड़ियों सा
देख रहा था उन चमकते तारों को
अपनी चमकती हुई आँखों से।

मातृ-मन्दिर

मिथिलेश शर्मा
अनुभागः पी.एस

भारत माता का यह मन्दिर,
समता का संवाद जहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावे सभी प्रसाद यहाँ।
जाति -धर्म या सम्प्रदाय का
नहीं भेद व्यवधान यहाँ
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसाई का
सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ ।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सभी तीर्थों का एक तीर्थ ये
हृदय पवित्र बना ले हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना ले हम।
बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझो उसकी प्रसव वेदना

वही लाल है माई का।
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विवाद यहाँ है,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
मिला सेव्य का हमें पुजारी,
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्त्तव्य यहाँ है
उठे-एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर,
उठे एक जयनाद यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
संघर्ष के मार्ग पर जो वीर चलता है
वो ही इस संसार को बदलता है,
जिसने अंधकार, मुसीबत और खुद से
जंग जीती, सूर्य बन कर वही निकलता है।
भारत माता की जय
वन्दे मातरम्
जय हिन्द जय भारत।

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं मिल सकती। अपनी भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए। इसमें कोई बाधा नहीं डालना और न किसी की बाधा हम सहन कर सकते हैं। पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिन्दी या हिन्दुस्तानी को ही मिलेगा।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

श्रद्धांजलि पद्म विभूषण गोपालदास नीरज

"हम तो मस्त फकीर, हमारा कोई नहीं ठिकाना रे!
जैसा अपना आना प्यारे वैसा अपना जाना रे!
दुनिया की चालों से बिल्कुल उल्टी अपना चाल रही!
जो सबका सिरहाना है रे वो अपना पैताना रे!
हम तो मस्त फकीर हमारा कोई नहीं ठिकाना रे!"

गोपालदास नीरज
(4 जनवरी 1925-19 जुलाई 2018)

आत्मा के सौन्दर्य का शब्द रूप है काव्य, मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य!

निर्माणी गतिविधियाँ

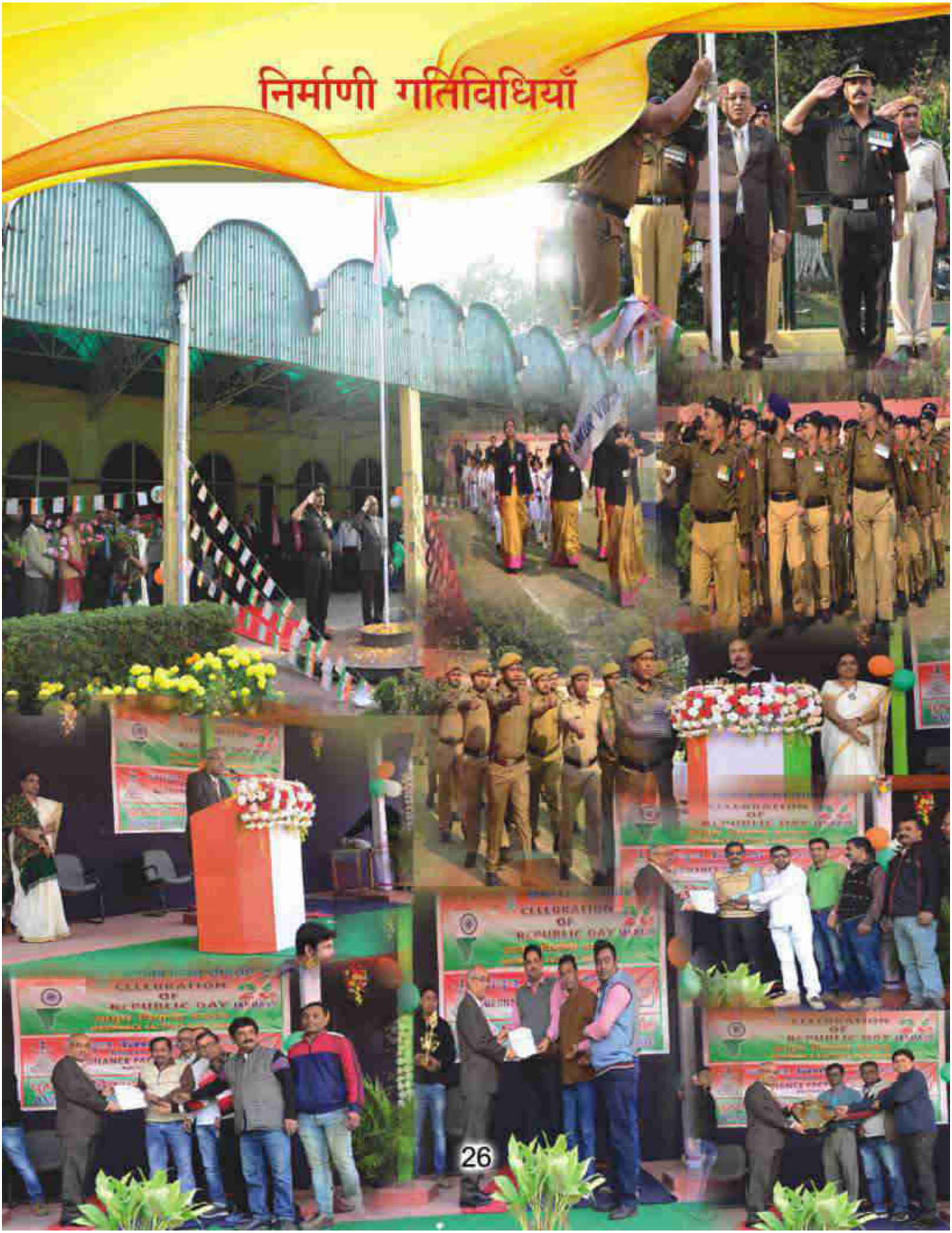

निर्माणी गतिविधियाँ

आयुध निर्माणी प्राथमिक विद्यालय

हिन्दी दिवस समारोह एवं राजभाषा कार्यशाला

हमारे अतिथि

खेलकूद

गाँधी जयंती समारोह

TREE PLANTATION
02-10-2020
ORDNANCE FACTORY DUM DUM
गाँधी जयंती समारोह
TREE PLANTATION
02-10-2020

निर्माणी गतिविधियाँ

सतर्कता सचेतनता सप्ताह
सतर्कता जागरुकता सप्ताह
VIGILANCE AWARENESS WEEK
QUALITY MONTH CELEBRATION

निर्माणी गतिविधियाँ

रक्तदान उत्सव

महिला दिवस का अनुपालन

राजभाषा उपलब्धियां

आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता
ORDNANCE FACTORY BOARD,KOLKATA
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA, MINISTRY OF DEFENCE

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक 08-03-2019 को आयुध निर्माणी हजरत ने आयोजित उत्तर / मध्य / दक्षिण / पूर्व / पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के आधार पर राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु आयुध निर्माणी हजरत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सदस्य/कार्मिक
आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता

दिनांक : 08-03-2019

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
GOVT. OF INDIA, MINISTRY OF DEFENCE
आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता
ORDNANCE FACTORY BOARD, KOLKATA
क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

प्रशस्ति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक 18.08.2019 को आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता ने आयोजित उत्तर / मध्य / दक्षिण / पूर्व / पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के आधार पर राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट / प्रशंसनीय कार्य निष्पादन हेतु आयुध निर्माणी हजरत ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

सदस्य / कार्मिक
आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता

दिनांक : 18-08-2019

कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1)
KOLKATA TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE (OFFICE-1)
नगराकाश मंत्रालय
आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नगराकाश सचिवालय (कार्यालय-1) की दिनांक 25.10.2019 को आयोजित 54 वीं बैठक में श्री-इ.ए.एस कुमार-शिवा, ए.डी. जिला राजभाषा अधिकारी के समक्ष आयुध निर्माणी, हजरत द्वारा कार्यालय ने अनुपालन किया।

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1)
नगराकाश, कोलकाता

दिनांक : 9.11.2019
स्थान : कोलकाता

कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1)
KOLKATA TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE (OFFICE-1)
नगराकाश मंत्रालय
आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नगराकाश सचिवालय (कार्यालय-1) की दिनांक 21.10.2019 को आयोजित 55 वीं बैठक में श्री-पी.के.ए एवं एस.-कर्मचारी ने जिला राजभाषा अधिकारी के समक्ष आयुध निर्माणी हजरत द्वारा कार्यालय ने अनुपालन किया है।

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-1)
नगराकाश, कोलकाता

दिनांक 21.10.2019
स्थान : कोलकाता

आपकी पावती

'तरंग' में प्रकाशित विभिन्न विषयक लेख, कहानियाँ, कविताएँ रोचक व ज्ञानवर्धक हैं और निर्माणी के अधिकारियों व कर्मचारियों की उत्तम साहित्यिक अभिरुचि को अभिव्यक्त करती हैं। 'इसरो : उपलब्धियाँ एवं चुनौती', कार्य संतुलन', 'जीवन का उपहार : अंगदान', 'प्रेरणादायक ग्रंथ भगवद गीता तथा आधुनिक प्रबन्धन', 'समय प्रबन्धन', 'राधा', 'इंसानियत' विशेष रूप से उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।
'तरंग' संकलन यौग्य है। इसके सफल प्रकाशन से जुड़े कर्मियों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

तरुण सागर
कार्य प्रबन्धक/ टी एस
आयुध निर्माणी भुसावल

'तरंग' का मुख्यपृष्ट काफी आकर्षक है। उच्च गुणवत्ता एवं आकर्षक कलेवर के साथ बहुरंगी 'तरंग' में प्रकाशित लेख, कहानियां, घटनाएं, प्रेरणादायक प्रसंग एवं आकर्षक फोटोग्राफ के साथ 'तरंग' का प्रकाशन सफल रहा है।

ए.के, शुक्ल /महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी शाहजहाँपुर

बंगाली भाषा को समाहित करते हुए हिंदी में प्रकाशित पत्रिका के प्रस्तुत अंक का मुद्रण उत्कृष्ट है। पत्रिका के इस अंक में आपके कार्यालय की विविध गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का समावेश अत्यंत सुरूचिपूर्ण ढंग से किया गया है। संपादन एवं छायाचित्रों के सटीक समायोजन ने पत्रिका को और सजीव बना दिया है। विविध विषयों पर प्रकाशित लेख, तकनीकी लेख, कहानी, कविताएं एवं संस्मरण आदि स्तरीय और पठनीय है।

सुरजित दास/महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी आवडी, चेन्नै

राजभाषा के उन्नयन एवं विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों का सुफल यह पत्रिका है। 'तरंग' के इस अंक में साहित्य की विविध विधाओं का समायोजन बड़ी कुशलता से किया गया है।
पत्रिका में प्रकाशित 'कार्य संतुलन' एवं 'समय प्रबंधन' लेख निश्चित ही उपयोगी एवं सूचनापरक हैं। साथ ही 'इसरो उपलब्धियां एवं चुनैति' लेख के माध्यम से भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान के बारे में शुरु से लेकर अब तक की प्रगति के संबंध में जानकारी दी गई है जो कि सूचनाप्रद है।
मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'तरंग' के प्रकाशन से लेखकों एवं पाठकों दोनों को ही राजाभाषा कार्यान्वयन की प्ररणा मिलेगी ।

संजीव गुप्ता/महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी देहरोड

स्तरीय लेखों, संस्मरणों, कविताओं, कहानियों तथा निर्माणी में आयोजित विविध समसामयिक गतिविधियों से संबंधित रंगीन छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका का स्वरूप निखर गया है। कार्मिकों की साहित्यिक रचनात्मकता एवं वैचारिक अभिव्यक्ति को प्रतिबिम्बित करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार संबंधी दायित्व को वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'तरंग' बखूबी निभा रही है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय हैं। पत्रिका समग्र रूप में अपने उद्देश्यों में सफल रही है।

राजीव कुमार/महाप्रबंधक
मशीनी औजार आदिरूप फैक्टरी अम्बरनाथ

'तरंग' पत्रिका का आद्योपांत पठन किया। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में माननीय गृह मंत्री एवं रक्षा मंत्री तथा हमारे आदरणीय महानिदेशक एवं अध्यक्ष के संदेश से परिपूर्ण पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को बढ़ावा देने की ओर अभिमुख है।

पत्रिका के माध्यम से निर्माणी की समस्त गतिविधियाँ प्रदीप्त हुई हैं। पत्रिका में प्रकाशित समस्त आलेख व रचनायें पठनीय व अनुकरणीय हैं तथा इसके लिए वे सभी रचनाकार प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र उत्तम व आकर्षक हैं तथा मुद्रण उत्तम कोटि का है। 'तरंग' में भारत सरकार के प्रमुख योजनाओं को प्रमुखता के साथ स्थान दिया गया है।

उपेन्द्र वशिष्ठ/ महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी परियोजना कोरवा

आपका अ.शा.पत्र सं0 01/09/ तरंग/डी.ओ/रा.भा दिनांक 20-03-2020 के माध्यम से आपकी निर्माणी की वार्षिक गृह पत्रिका तरंग के 22वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।
पत्रिका में समाहित लेख, कविताएं, निर्माणी की गतिविधियों की जानकारी एवं विभिन्न सूचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। निःसंदेह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रही है।
मुझे आश। है कि आगामी वर्षों में भी पत्रिका अपने स्वरूप में निरन्तर निखार लाते हुए राजभाषा की प्रगति और उसके उत्तरोत्तर विकास में सहायक सिद्ध होंगी।

पी.के दीक्षित/ महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी रायपुर, देहरादून

पत्रिका में विभिन्न प्रकार की सामग्री उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग देने के साथ-साथ, अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखन रूचि को प्रस्तुत कर रही है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचानाएँ पठनीय हैं फिर भी 'इसरो (ISRO) उपलब्धियाँ एवं चुनौती', प्रेरणादायक ग्रंथ 'भगवद् गीता तथा आधुनिक प्रबंधन' तथा 'समय प्रबंधन' विशेष उल्लेखनीय हैं।
आपके सुयोग्य दिशानिर्देश एवं प्रभावी मार्गदर्शन में आयुध निर्माणी दमदम विकास की ओर अग्रसर हो ऐसी कामना के साथ, उत्कृष्ट पत्रिका संपादन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

बी. पी. मिश्रा/महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी चंडीगढ़

आकर्षक कलेवर में निर्माणी की विशेष उपलब्धियों तथा महत्वपूर्ण क्रियाकलापों की सचित्र जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में निर्माणी के प्रयासों के विवरण ने पुस्तक को संग्रहणीय बना दिया है। विशेषकर श्री बंटी कुमार का लेख 'जीवन का आधारः अंगदान,' श्री मुकेश कुमार पंडित का लेख 'भारतीय योग का वैश्विक विस्तार,' श्रीकांत मिश्रा का लेख 'भेड़ाघाट,' 'धुआँधार' के साथ-साथ बंगला भाषा का अक्षर परिचय पठनीय लगे।

एम एस वाघ/महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी नालंदा

केन्द्रीय सरकार का राजभाषा नियम 1976

हिन्दी में प्रवीणता का अर्थ है-

यदि किसी कर्मचारी ने:

- मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है।
- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था।
- निर्धारित प्रपत्र पर घोषणा कर दे कि उन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान का अर्थ है-

- यदि किसी कर्मचारी ने:
- मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है।
- केन्द्रीय सरकार की हिन्दी प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा पास कर ली है।
- केन्द्रीय सरकार द्वारा निमित्र विनिर्दिष्ट कोई इन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।
- निर्धारित प्रपत्र पर घोषणा कर दे कि उन्हें हिन्दी में कार्य करने का ज्ञान प्राप्त है।

अनुच्छेद 351

हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि करे, उसका विकास करे, ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किये बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लेखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मासात करते हुए तथा जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत के तथा गौपतः वैसी उल्लेखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

राष्ट्रभाषा राष्ट्र का गौरव है इसे अपनाना और इसकी अभिवृद्धि करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। यह राष्ट्र की एकता और अखंडता की नींव है। आओ, इसे सुदृढ़ बनाकर राष्ट्रीय भवन की सुरक्षा करे।

लोकमान्य तिलक

राजभाषा में काम करने का महत्व

- कार्यालयों द्वारा होने वाले पत्राचार से अन्य विभागों के बीच एक सुसम्बद्धता स्थापित होती है। यदि यह कार्य राजभाषा हिन्दी में होगा तो अभ्यास बढ़ने के साथ-साथ हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार होगा।

- राजभाषा हिन्दी में काम करके हम सभी के सामने उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं।

- देश की अधिकांश जनता भाव सम्प्रेषण के लिए हिन्दी भाषा का उपयोग करती है अतः समस्याओं के त्वरित निदान में इससे सहायता मिलती है।

- उत्पादन ईकाई, परियोजना प्रारम्भ होने और आगे प्रकाशन, वित्त, पत्राचार सभी महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पादन में राजभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है अतः हर कार्यालय में ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए।

अनुपालन का उत्तरदायित्व

राजभाषा नियम 1967 के उपनियम 12 के अनुसार कार्यालय के प्रमुख का यह दायित्व है कि वह यह सुनिश्चत करें कि उसके कार्यालय में राजभाषा अधिनियम और नियमों का समुचित पालन हो और उसके लिए वह उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच के लिए उपाय करें।

हिंदी बंगला अक्षर परिचय (হিন্দী বাংলা অক্ষর পরিচয়)

स्वर वर्ण (স্বর বর্ণের পরিচয়)

অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ এ ঐ ও ঔ অং অঃ

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन वर्ण (ব্যঞ্জন বর্ণের পরিচয়)

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ক খ গ ঘ ঙ চ ছ জ ঝ ঞ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

ট ঠ ড ঢ ণ ত থ দ ধ ন

प फ ब भ म य र ल व श

প ফ ব ভ ম য র ল ব শ

ष स ह क्ष त्र ज्ञ

ষ স হ ক্ষ ত্র জ্ঞ

बारहखड़ियाँ (স্বরচিহ্ন সমূহের যোগ)

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

ক কা কি কী কু কূ কৃ কে কৈ কো কৌ কং কঃ

ख खा खि खी खु खू खृ खे खै खो खौ खं खः

ख खা খি খী খু খূ খৃ খে খৈ খো খৌ খং খঃ

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए

तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और **राष्ट्र की एकता**

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिनि मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

Help us to help you
कोरोना के
विरुद्ध युद्ध के लिये
हम
तैयार हैं
• अब हमे मिला एक और सुरक्षा कवच। • आएं, कोविड-19 टीकाकरण अभियान के साथ जुड़े।
पूर्ण सुरक्षा के लिए टीकाकरण के बाद भी
पाँच सावधानियाँ अवश्य बरतें।
Helpline No.: 1075 (Tollfree)
mohfw.gov.in
@MoHFWIndia
@MoHFW_INDIA
@mohfwindia
mohfwindia

नोवल कोरोनावायरस रोग
(COVID-19)
कोरोना को हराने के लिए यह उपाय है ज़रूरी,
टीकाकरण के समय और उसके बाद भी
बनाए रखें दूसरों से उचित दूरी
2 गज
6 फीट
2 गज
6 फीट
दवाई भी और कड़ाई भी

नोवल कोरोनावायरस रोग
(COVID-19)
कोविड अनुरूप व्यवहारों का पालन करें,
जब भी घर से ऑफिस के लिए निकलें

नोवल कोरोनावायरस रोग
(COVID-19)
कोरोना को फैलने से रोकना है,
हर जगह सतहों को साफ और
कीटाणुरहित रखना है
हर जगह सतहों और वस्तुओं को साफ और कीटाणुरहित करें

नोवल कोरोनावायरस रोग
(COVID-19)
दवाई भी और कड़ाई भी
COVID-19 टीकाकरण
पंजीकरण के बाद टीकाकरण
की जानकारी कैसे मिलेगी?

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छता शपथ

- महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी।
- महात्मा गाँधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आजाद कराया।
- अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।
- मैं शपथ लेता हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा और उसके लिए समय दूँगा।
- हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा।
- मैं न गंदगी करूँगा न किसी और को करने दूँगा।
- सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गाँव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूँगा।
- मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं।
- इस विचार के साथ मैं गाँव-गाँव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा ।
- मैं आज जो शपथ ले रहा हूँ, वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाऊँगा। वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूँगा।
- मुझे मालुम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मददत करेगा।